

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



# टंकारा समाचार

( श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र )

अगस्त 2018 वर्ष 21, अंक 8

विक्रमी सम्वत् 2075

एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये

दूरभाष ( दिल्ली ) : 23360059, 23362110

दूरभाष ( टंकारा ) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये

ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

कुल पृष्ठ 24

डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर 5 वर्ष पूर्ण होने पर पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी को समर्पित विशेषांक

## पूनम की चांदनी से फिजाएं बदली हैं

□ महात्मा चैतन्यस्वामी

इसे हम अपना सौभाग्य समझते हैं कि हम डी.ए.वी. संस्थान के साथ बहुत काल से जुड़े हुए हैं। सौभाग्य इसलिए क्योंकि मैंने व सत्यप्रियायतिजी ने डी.ए.वी. के विभिन्न स्कूलों तथा कॉलेजों में छात्र और छात्राओं के सैकड़ों ही 'वैदिक चेतना शिविर' एवं 'चरित्र निर्माण शिविर' संचालित करके उन्हें वैदिक विचारधारा से परिपक्व करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है तथा हम स्वयं भी पुण्य के भागी बने हैं। इसके अतिरिक्त हमने डी.ए.वी. के धर्माचार्यों, प्राचार्यों, अध्यापकों तथा पंजाब प्रान्त की समस्त महिला प्राध्यापिकाओं के भी शिविर लगाए हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के देहावसान के बाद जब उनका कोई स्मारक बनाने की बात चली थी तो यह बात सर्वसम्मति से स्वीकार की गई थी कि उनकी स्मृति में कोई शिक्षण-संस्थान बनाया जाए। इस बात का स्मरण-मात्र करने से ही मन पुलकित, गौरवान्वित, श्रद्धान्वित और स्वाभिमानी हो जाता है कि डी.ए.वी. संस्थान उन युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का स्मारक है जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी में इस धरा पर आकर पुनः वेदों का ज्ञान प्रवाहित करके प्रेम, सौहार्द, समरसता एवं मानवधर्म (वेद प्रतिपादित) की दिशा में सार्थक एवं अद्भुत कार्य किया। शिक्षा के क्षेत्र में आज भी डी.ए.वी. का अपना वर्चस्व है यह बात स्वतःसिद्ध है मगर इसके साथ-साथ डी.ए.वी. का गौरव इस बात से और भी अधिक बढ़ जाता है कि यहां पर शिक्षा के साथ-साथ छात्र/छात्राओं को वे सार्वभौमिक (Universal) एवं मानवतावादी (Humanitarian) वैदिक संस्कार भी दिए जाते हैं जो



डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी

ओ३म्  
विश्वानि देव  
सवितर्दुर्गतानि परासुव।  
यद् भद्रन्तु आसुवा॥॥

वास्तविक रूप में न केवल उनके लिए सर्वोत्तम साथी हैं बल्कि वे संस्कार ही व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्व की सुख-शान्ति और समरसता का आधार हैं।

किसी भी संस्था के उत्थान एवं पतन का आधार उसके साथ जुड़े हुए व्यक्तियों पर ही निर्भर करता है और यदि सौभाग्य से संस्था को संस्कारित, विद्वान्, एषणारहित, सबल, ऊर्जावान्, ईमानदार, पारदर्शित, सिद्धान्तनिष्ठ, समर्पित, संस्था के प्रति निष्ठा एवं श्रद्धावान् नेतृत्व प्राप्त हो

जाए, फिर तो कहना ही क्या है गत पांच वर्षों से डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को एक ऐसे ही व्यक्तित्व माननीय आर्यरत्न पदम्श्री डा. पूनम सूरी जी का नेतृत्व प्राप्त हुआ है। इनके नेतृत्व में सबसे प्रथम श्लाघनीय बात जो मुझे लगी, वह यह है कि संस्था का निर्माण जिस उद्देश्य को लेकर किया गया था, इन्होंने उन-उन उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में सार्थक एवं सराहनीय कार्य किया है। जैसा कि मैंने प्रारंभ में कहा है कि हमारा डी. ए.वी. संस्थान से बहुत पुराना तथा सन्निकट का सम्बन्ध रहा है। आज भी है, हमने देखा है कि श्री पूनम जी के आने से संस्थान ने सही दिशा में करवट ली है क्योंकि ये स्वयं वैदिक-संस्कारों से समन्वित हैं। वैदिक विचारधारा इन्हें पैतृक सम्पदा के रूप में ही प्राप्त हुई है। इनके आने से संस्था अपने मूल के साथ जुड़ी है और जिस प्रकार कोई भी पेड़ या पौधा तभी अपना समग्र विकास करने में सफल होता है यदि वह अपने

( शेष पृष्ठ 22 पर )





# आज के महात्मा हंसराज डॉ. पूनम सूरी

हम जब महात्मा हंसराज के जीवन की ओर दृष्टीगोचर करते हैं तो देखते हैं कि महात्मा जी का सारा जीवन त्याग से भरा हुआ है। इसी कारण आपको त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। महात्मा हंसराज जी अत्यधिक शिक्षित होते हुए भी सरकारी नौकरी में ना जाकर डी.ए.वी. की निःशुल्क सेवा की, परिवार की सभी जिम्मेदारियां अपने भाई को देकर समाज सेवा के मैदान में कूद पड़े। यह जग-जाहिर है। घर का वातावरण पूर्ण रूप से वैदिक मान्यताओं से प्रेरित था इसी कारण बेटा बलराज भी पिता की सेवाओं से प्रेरित था। बेटे बलराज ने स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया और पकड़े जाने पर अंग्रेजों की अदालत में केस भी चला और कलान्तर में स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आज के पंजाब नेशनल बैंक के आप संस्थापक अध्यक्षों में से एक रहे।

भारत के टुकड़े होने से पूर्व डी.ए.वी. के उत्थान में महात्मा जी का योगदान अभूतपूर्व रहा और उनकी मृत्यु उपरांत डी.ए.वी. के संस्थान को जिन शिक्षाविदों का योगदान मिला वह भी अभूतपूर्व रहा है और आज के परिवेश में पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी ने डी.ए.वी. आन्दोलन को जो चार चाँद लगाये हैं, उसको कुछ शब्दों में कह पाना असम्भव है।

आपने प्रधान पद ग्रहण करने से पूर्व सचिव पद पर कई वर्ष अपनी सेवाये दी है। विशेष कर स्व. ज्ञान प्रकाश चोपड़ा जी के साथ जो आपकी जोड़ी थी वह एक और बेटे और पिता की थी वही दूसरी और एक संस्था की सफलता में जिस प्रकार का समन्वय होना चाहिए, वह आदरणीय सूरी जी एवं चोपड़ा जी में था। यही कारण था कि डी.ए.वी. दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर रहा।

जब वर्तमान में डॉ. सूरी की बात करे तो मुझे पांच वर्ष पूर्व उनका साक्षात्कार लिये बातों का स्मरण हो आया। आपका कहना था डी.ए.वी. का संविधान पढ़ो आर्य समाज, डी.ए.वी. के संविधान का आधार है। आर्य समाज हमारी 'माँ' है। इस कारण मेरे कार्यकाल में आर्यसमाज और वेद प्रचार सबसे अग्रणी रहेगा और आज जब मैं उनके 5 वर्ष के कार्यकाल पर दृष्टि डालता हूँ तो देखता हूँ कि आपने जैसा कहा वैसा कर के दिखाया। डी.ए.वी. मुख्यालय में यज्ञशाला का निर्माण और केवल निर्माण ही नहीं उस यज्ञशाला का पूर्ण सदुपयोग प्रति माह का प्रारम्भ यज्ञ से और उसी माह आने वाले कर्मचारियों अधिकारियों के जन्मदिवस पर उन सबके लिए विशेष आशीर्वाद की आहुतियों से यज्ञ की पूर्णाहुति करवाना और फूल मालाओं से अभिनन्दित करना विशेष महत्व रखता है।

सभी विशेष अन्तरंग सभाओं कि बैठक, प्रधानाचार्यों की बैठकों, नये प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों की प्रेरणा बैठकों आदि का शुभारम्भ यज्ञ से उसी नव निर्मित यज्ञशाला में होता है। इससे जहाँ कर्मचारियों में आर्य समाज और वेद के प्रति उनका लगाव और श्रद्धा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यज्ञ उपरान्त, यज्ञ प्रार्थना अब संगीतमय ढंग से डी.ए.वी. मुख्यालय के कर्मचारी ही करते हैं जो इससे पहले इससे अजमाये, पूरे भारत में सभी डी.ए.वी. के संस्थानों में इसी प्रकार मासिक एवं अन्य विशेष उत्सवों पर यज्ञ करना अनिवार्य है।

ग्रीष्म कालीन अवकाश में सभी विद्यालयों में चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन, वर्ष में दो बार आयोजित करना अनिवार्य करना एक महत्वपूर्ण आदेश है।

आर्य समाज के मुख्य पर्वों का राष्ट्रीय स्तर पर अलग-अलग प्रान्तों एवं शहरों में करवाना, जहाँ आज से पूर्व केवल महात्मा हंसराज दिवस केन्द्रीय स्तर पर दिल्ली में ही आयोजित होता था। आपकी सोच से छोटे बड़े शहरों में स्थानीय आर्य समाज के लोगों को सम्मिलित कर आयोजित होने से वैदिक मान्यताओं का प्रचार-प्रसार होता है। वहीं डी.ए.वी. के विद्यालयों की इसमें भागीदारी हो जाती है। बच्चों के माता-पिता की धारणा आर्य समाज के प्रति बढ़ती है और पारिवारिक व्यक्तियों को जब आर्य समाज की वैज्ञानिक तर्क संगत विचार सुनने को मिलते हैं तो आधुनिक परिवेश में उन्हें धारण करने में सुविधा होती है।

महात्मा हंसराज दिवस को 'समर्पण दिवस' के रूप में नामकरण आपकी सोच का ही नतीजा है।

चरित्र निर्माण शिविरों द्वारा बालकों में पड़े संस्कार जो बालक आज राष्ट्र सेवा में मन्त्री, आई.ए.एस., आई.पी.एस. एवं सेना में उच्च पदों पर कार्य करते डी.ए.वी. के छात्र के चरित्र में नजर आती है वह सराहनीय है। देश द्वारा डी.ए.वी. से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी विशेष सम्मान से अलंकृत किये जा चुके हैं।

डॉ. सूरी जी के कार्यकाल में ही डी.ए.वी. भारत का सबसे बड़ा गैर सरकारी शिक्षण संस्थान हुआ जो लिम्का बुक आफ रिकॉर्ड में अंकित है और वह दिन दूर नहीं जब डी.ए.वी. विश्व स्तर की संस्था हो, गिनीस बुक ऑफ रिकॉर्ड में भी अपना नाम अंकित करे, कोई बड़ी बात नहीं है। डॉ. सूरी जी की यह अभिलाषा भी है कि उन्हें डी.ए.वी. को विश्व स्तर पर पहचाना है। प्रत्येक देश में हमारी संस्था हों। सभी भाषाओं में हम वेद प्रचार कर सकें।

अगर हम महात्मा हंसराज के जीवन को देखे तो ठीक उसी प्रकार डॉ. सूरी जी ने मन, तन और जीवन डी.ए.वी. आन्दोलन हेतु हृदय की भावनाओं से प्रेरित हो, समर्पण किया हुआ है। पांच वर्ष के कार्यकाल में देखने में आया कि घर को त्याग, व्यवसाय को त्याग सारे परिवार की जिम्मेदारी छोटे भाई नवीन जी पर छोड़ डी.ए.वी. आन्दोलन में लगा दिया। माह में 20 दिन डी.ए.वी. के कार्यों से देश के कोने कोने में पहुँच रहे हैं। यहां यह कहना, अतिशयोक्ति नई होगी कि वह श्वेत वस्त्रों में सन्यासी ही है। तन कि परवा किये बगैर, चिकित्सक की सलाह के विरुद्ध एक अजीब सी मस्ती में इस डी.ए.वी. रूपी पेड़ को दिन प्रतिदिन सींचते जा रहे हैं।

महात्मा हंसराज से प्रेरणा लेते हुए आप ने आज तक डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति से एक नया पैसा भी नहीं लिया। समर्पण ऐसा कि "मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित"। कई बार देखने/सुनने को मिला कि सूरी जी तेज ज्वर में भी डी.ए.वी. मुख्यालय के कार्यालय में उपस्थित हैं। मैं नमन करता हूँ ऐसे समर्पण को और लेख के शीर्षक को सार्थक करते सूरी जी के जीवन को दृष्टीगोचर करते हुए कितना उपयुक्त शीर्षक है। "आज के महात्मा हंसराज डॉ पूनम सूरी"।

अजय टंकारावाला



# मेरे आशीर्वादों का अधिकारी: डॉ. पूनम सूरी

□ रामनाथ सहगल

मैंने अपनी युवा अवस्था में बेटे पूनम सूरी का बाल्य काल देखा है। महात्मा आनन्द स्वामी जी विभाजन के उपरांत जमुनानगर में आ गए और वहां आपने गुरुकुल रावल के संस्थापक स्वामी आत्मानन्द महाराज से संन्यास लिया तब मैं भी वहां उपस्थित था। संन्यास के उपरांत आप दिल्ली पधारे और आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में आपने अपना साधना कक्ष बनाया, और कालान्तर में आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग में कुटिया रूपी भवन में रहने लगे। उन दिनों मेरा दोनों आर्या समाजों से सम्बन्ध रहा। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का दफ्तर हनुमान रोड में हुआ करता था और मैं इसका मन्त्री था। इसी प्रकार आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा का भी मन्त्री था। इस कारण महात्मा आनन्द स्वामी जी से घनिष्टता बढ़ती गई। स्वामी जी का बालक पूनम से लगाव था इस कारण वह स्वामी जी को यदाकदा मिलने आया करते थे। और मुझे आज भी वह दृश्य आंखों के सामने आ जाता है जब पूनम सूरी जी बाल्य काल में स्वामी जी के गोद में बैठकर संध्या हवन के मन्त्रों का उच्चारण किया करते थे। यही वह समय था जब बालक पूनम सूरी में वैदिक मान्यताओं को स्वामी जी द्वारा घुट्टी के रूप में डाल दिया था।

यही कारण है कि बेटा पूनम सूरी जहां डी.ए.वी. के लिए पूर्ण रूप से समर्पित है वहीं उनके मन-मस्तिष्क में आर्य समाज “माँ” के रूप में स्थापित है। मैं अपनी आयु के 95 वर्ष पूर्ण करने जा रहा हूं और मैंने डी.ए.वी. के कई प्रधानों के साथ कार्य किया है लेकिन यहां मुझे बताते हुए गर्व/संतुष्टी हो रही है कि आज से पूर्व कोई ऐसा प्रधान डी.ए.वी. में नहीं हुआ जो पूर्ण रूप से आर्य/वैदिक मान्यताओं पर चलने वाला हो और जिसके मन में वेद प्रचार और युवा चरित्र निर्माण की लगन हो। **इसी कारण से मैं कहता हूं कि पूनम सूरी ही वह व्यक्तित्व है जो मेरे आशीर्वादों का अधिकारी है।**

आज अकस्मात् इन पंक्तियों को लिखते हुए पुरानी बातें स्मरण हो आई जिन्हें आप के साथ साझा करना चाहता हूं।

1944-1945 की बात है रावलपिण्डी में हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा हुआ। रावलपिण्डी के गांव-गांव में मुसलमानों ने हिन्दु लड़कियों से बदसलूकी करना शुरू कर दिया, इसके परिणाम स्वरूप लड़कियों ने अपने इज्जत बचाने के लिए कुओं में छलांग लगाना शुरू कर दिया। यह समाचार पूरे पंजाब में फैल गया तब महात्मा खुशहाल चन्द जी

मिलाप पत्र के सम्पादक थे और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे रावलपिण्डी आ गये और इनकी सहायता करने के लिए मैं 20 वर्षीय युवा अवस्था में आर्य समाज रावलपिण्डी का मन्त्री था। मुझे महात्मा जी के साथ सहायक के रूप में कार्य करना था। यह फैसला हुआ कि हम लोग गांव-गांव में जाएं और ऐसे परिवारों की सहायता करें जिनकी बेटियों के साथ बदसलूकी की जा रही है। हम रावलपिण्डी के आस-पास के गांव में गए और गुरुकुल रावल जो रावलपिण्डी से 12 मील की दूरी पर था और आचार्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने सूचित किया था कि गुरुकुल में भी युवा मुसलमानों ने तोड़ फोड़ की है। हमारे से जो भी सहायता हो सकी हमने की। ऐसे परिवार जो अपने गांव में डर के कारण रहने में असमर्थ थे उन परिवारों को बच्चियों समेत आर्य समाज रावलपिण्डी में एक कैम्प लगाकर उन्हें सुरक्षित स्थान दिया। इस कैम्प का संयोजक मैं ही था।

महात्मा खुशहाल चन्द विभाजन उपरांत महात्मा आनन्द स्वामी बने, पूरा सूरी परिवार मेरे सहित वहां उपस्थित था। स्वामी जी ने संन्यास उपरांत अपनी धर्मपत्नी पूनम सूरी जी की दादी श्रीमती मेलादेवी जी से प्रथम भिक्षा मांगी और उनके पांव छुए। संन्यास उपरांत अपने प्रथम वेद प्रचार यात्रा पर निकलते हुए वह सौराष्ट्र (गुजरात) जहां स्वामी दयानन्द जी का जन्मस्थान टंकारा पधारे और उसी कमरे में ठहरे जहां स्वामी जी का जन्म हुआ था। राजकोट से आए उनके भक्त उन्हें राजकोट रात्रि शयन के लिए ले जाना चाहत थे लेकिन स्वामी जी ने कहा इस भवन को देखकर जो ऊर्जा तरंगों में मुझे प्राप्त हो रही है उसे मैं पूरी रात्रि शयन करके प्राप्त करना चाहता हूं ऐसी थी उनकी ऋषि जन्मभूमि के प्रति श्रद्धा और आज उनके पोते पूनम सूरी जी जन्मभूमि ट्रस्ट में प्रमुख ट्रस्टियों में हैं। मुझे आज भी याद है आज से 25-30 वर्ष पूर्व पूनम सूरी जी ने जन्मभूमि के हेतु 25000/- रुपये का दान दिया था और निरन्तर वह यह राशि देते रहे। समय के साथ यह राशि बढ़ती गई।

अन्त में मैं इतना ही कहूंगा कि पूनम जी को मेरे असंख्य आशीर्वाद और इसी तरह स्वस्थ रहते हुए दीर्घायु को प्राप्त करते हुए ऋषि मिशन के कार्य को और तीव्रता से करते रहे।

**आशीर्वाद सहित**

-उपप्रधान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति एवम्  
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

## टंकारा समाचार

### पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 21 वर्षों से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य हैं।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रुपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक



# पुरुषार्थ व कर्मठता के प्रतीक-पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी

□ प्रो. डॉ. श्रीमती अजय सरिन

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी, प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, एक प्रख्यात शिक्षाविद्, श्रेष्ठ वक्ता, विशिष्ट व्यक्तित्व के स्वामी, प्रतिष्ठित विचारक व गंभीर चिंतक तथा अग्रगण्य समाज सेवक भी हैं। कुलाधिपति, डी. ए.वी. विश्वविद्यालय होने के साथ-साथ आप एक ख्यातिप्राप्त, वरिष्ठ पत्रकार हैं जिन्होंने सदैव निष्पक्ष व निर्भीक होकर पत्रकारिता धर्म का पालन किया और हमेशा सच का मार्ग अपनाया। आपने मसूरी व लंदन जैसे राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय प्रदेशों से वैविध्यपूर्ण शिक्षा प्राप्त की, जिससे आपको निर्णय लेने, नेतृत्व करने, विकास व नवोत्पाद को प्रदर्शित करने की अनुपम क्षमता प्रदान की। आप दूरदर्शिता पूर्ण विचारों से युक्त व्यक्ति हैं, जिन्होंने सबसे डी.ए.वी. की बागडोर अपने हाथों में संभाली है, तब से हमेशा उसके विकास का लक्ष्य देखा और प्राप्त किया।

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी, बचपन से ही आर्य समाज व समाज सुधार के सिद्धांतों में विश्वास करते रहे हैं क्योंकि आप एक महान लेखक व गांधीवादी विचारक महात्मा आनन्द स्वामी जी के पौत्र हैं। महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती आर्य समाज के सुप्रसिद्ध नेता एवं 'आर्य गजट' तथा 'मिलाप' आदि पत्रों के सम्पादक थे। वे अविभाजित पंजाब की 'पत्रकारिता के पितामह' तथा संघर्षशील सन्यासी थे। आर्य समाज से प्रभावित होकर उन्होंने युवावस्था में ही अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया और आजीवन इस संकल्प का अनथक प्रयासों सहित पालन भी किया। आपकी प्रतिष्ठा का रूप में आपके सुपौत्र डॉ. पूनम सूरी जी सत्य के सन्मार्ग को अपना कर आपके ही सिद्धांतों का अनुकरण करते हुए अपने वंश को गौरवान्वित किया।

डॉ. पूनम सूरी जी, डी.ए.वी. के मूल्यों व संस्कारों से ओत-प्रोत जीवन जीने की सदैव-प्रेरणा देते हैं। रसायनशास्त्री, प्रो. गुरुदत्त विद्यार्थी जी द्वारा किया गया डी.ए.वी.-दयानन्द एंग्लो वैदिक नामकरण इसलिए स्वीकार किया गया था कि एंग्लो शब्द विज्ञान, आधुनिक तकनीकी व उच्च शिक्षा का प्रतीक है और उसके एक तरफ स्वामी दयानन्द जैसे महान विचारक व समाज सुधारक के सिद्धांतों और दूसरी ओर वैदिक संस्कारों से सम्बन्धित शिक्षा प्रदान करना ही डी.ए.वी. का सदैव मुख्य लक्ष्य रहेगा। इसी लक्ष्य को लेकर आधुनिक प्रतिस्पर्धा के युग में डी.ए.वी. का परचम आसमान की ऊँचाईयों में लहरा रहा है और विकास के उच्चतम शिखर को प्राप्त कर रहा है।

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी ने पर्यावरण संरक्षण के अन्तर्गत 'जल संरक्षण', 'गौ ग्रीन' इत्यादि विभिन्न परियोजनाएँ क्रियान्वित की। इसके अतिरिक्त 'रक्तदान' के अनगिनत शिविर लगाकर समाज में जन-जागृति का संचार किया। शिक्षा व लिटरेचर के क्षेत्र में असाधारण व विशिष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त करने हेतु आपको भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' के सम्मान से अलंकृत किया गया जो कि समस्त डी.ए.वी. संस्था के लिए अत्यंत हर्ष व गौरव का विषय है। देश के सर्वोत्तम नागरिकों को दिए जाने वाले सम्मान से विभूषित होने के बावजूद आप अत्यंत कोमल हृदय, विनीत, सादगीपूर्ण व अभिमानरहित व्यक्ति हैं। आपके बारे में यदि कहा जाए कि ईश्वर स्वरूप इंसान इस संसार में सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध व चरित्र-निर्माण के मार्ग पर अनवरत कार्यशील

है तो अतिशयोक्ति न होगी।

कर्मठता व पुरुषार्थ के प्रतीक डॉ. सूरी जी का मानना है कि विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य ही अभूतपूर्व सफलताओं ने उसकी इच्छाओं व आकांक्षाओं को पंख प्रदान किए हैं और वास्तविक रूप में भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है, जो स्वयं पर विश्वास करते हैं। वे जो अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति पर आस्था रखते हैं, वही व्यक्ति जीवन में सफलता के मार्ग पर अग्रसर होते हैं। आपके वास्तविक, ईमानदार, विचारशील, दूसरों का हित चाहने वाले व प्रीतिकर स्वभाव के कारण ही आप सभी को प्राप्य व सुगम्य है और सदैव सभी को अपनी मधुर वाणी में अत्यंत विनम्रता से 'स्वस्थ रहो, व्यस्त रहो व मस्त रहो' का संदेश देते हुए यही कहते हैं कि, भाग्य और पुरुषार्थ एक दूसरे के पूरक हैं। पुरुषार्थी अथवा कर्मवीर व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं व समस्याओं को सहजता से स्वीकार करते हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी कर्मठ व्यक्ति विचलित न होकर साहसपूर्वक उन कठिनाइयों का सामना करते हैं। जीवन संघर्ष में वे निरंतर विजय की ओर अग्रसर होते हैं और सफलता की ऊँचाईयों तक पहुंचते हैं। गीता में श्रीकृष्ण ने सच ही कहा है:-

**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः।**

अथवा

कर्म का मार्ग ही पुरुषार्थ का मार्ग है।

आप स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के अनुयायी होने के नाते उन्हीं के सिद्धांतों का अनुकरण करते हुए देश की असली संपत्ति युवा-वर्ग को मानते हुए हमेशा युवा-पीढ़ी को प्रोत्साहित व प्रेरित करते हैं। आपका मानना है कि राष्ट्र को नेतृत्व में आदर्शवादी युवाओं की आवश्यकता है तो भारतीय मूल्य एवं वैदिक संस्कारों को अपनाकर उच्च-शिक्षा प्राप्त कर देश का नाम रोशन कर सकें। आपने छत्तीसगढ़, झारखण्ड व बिहार जैसे राज्यों में भी शिक्षा का स्तर बढ़ाने का न केवल संदेश दिया बल्कि वहां के विभिन्न शिक्षा संस्थानों को डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी से सम्बद्ध कर इन क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने का उपक्रम भी किया।

आपका मानना है कि सफलता प्राप्त करने के लिए ज्ञान, क्रिया व कर्म में सामंजस्य का होना अति आवश्यक है और साथ ही साथ संस्कारों का सौजन्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य ही समाज में उत्कृष्ट व्यक्तियों का विस्तार करना है ताकि व्यक्ति मानवता, करुणा, इन्सानियत जैसे सर्वोत्तम गुणों को आत्मसात कर सके। शिक्षा व शिक्षक को समाज में सर्वोच्च स्थान देते हुए डॉ. पूनम सूरी जी का मानना है कि,

**सीखना मुश्किल है जुस्तजू चाहिए,**

**सिखाना और भी मुश्किल है**

**खाक में मिटने की तमन्ना चाहिए।**

हम सबका यह परम सौभाग्य है कि हम अति कर्मठ, धैर्यपूर्वक अपने कर्तव्य-पथ पर अडिग रहने वाले, पुरुषार्थ के प्रतीक डॉ. पूनम सूरी जी की रहनुमाई में डी.ए.वी. के विभिन्न शिक्षा संस्थानों में कार्यरत हैं और अपनी संस्था, समाज, परिवार व देश को गौरवान्वित करने हेतु अग्रसर हैं।

- प्राचार्या हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर

# शिक्षा और संस्कृति का संगम: पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

□ डॉ. रमा

डी.ए.वी. विश्व की प्रथम ऐसी संस्था है जिसने भारतीय समाज में पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा का अद्भुत समन्वय किया। यह एक ऐसी संस्था के रूप में विख्यात है जिसने समय-समय पर ऐसे महापुरुषों को जन्म दिया जिन्होंने देश की तस्वीर बदल डाली। इस संस्था ने ऐसे-ऐसे कर्मयोगियों को जन्म दिया जिनका उद्देश्य समाज को सद्भावना और एकता के मार्ग पर रहा। इस आर्य समाज के चिंतकों और मनीषियों ने भारतीय समाज को दिशा देने के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया। वर्तमान समय में आर्य समाज भारतीय समाज और जनजीवन को दिशा प्रदान करने का सबसे बड़ा माध्यम बन चुका है। शिक्षा जगत् में आज डी.ए.वी. संस्था जैसी कोई दूसरा संस्था नहीं है। डी.ए.वी. सिर्फ उच्च शिक्षा नहीं देती बल्कि विद्यार्थियों के अंदर उच्च संस्कारों को पल्लवित-पुष्पित भी करती है।

आदरणीय पूनम सूरी ऐसे ही आर्य समाज के हिस्सा हैं जिसका उद्देश्य समाज को विकास और प्रगति के उच्चतम स्थान तक ले जाना है। आज उनके नेतृत्व में पूरा डी.ए.वी. शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। नवजागरण से लेकर भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन की परिणति तक भारतीय राजनीतिक पटल पर जिन अनेकानेक घटनाओं का प्रस्फुटन हुआ, जिसमें आर्यसमाज का योगदान सर्वाधिक प्रभावकारी रहा। आर्यसमाज ने ना केवल 'स्वराज' का सर्वप्रथम उद्घोष किया वरन् स्वाधीनता, स्वेदशी, स्वत्व और स्वाभिमान का भी मूल मन्त्र दिया। पद्मश्री पूनम सूरी ने आर्य समाज के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कठिन से कठिन परिस्थिति का सामना करते हुए भारतीय समाज में आधुनिक शिक्षा का प्रसार तो किया ही साथ छात्रों को सामाजिक समस्याओं से लड़ने के लिए भी बेसिक स्तर पर मजबूत किया। भारत में शिक्षा के साथ ही भारतीय संस्कृति और सभ्यता को भी आर्यसमाज ने विकसित किया।

कुछ लोगों का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली और बहुआयामी होता है कि, उनपर लिखने बैठें तो लिखने का साहस ही नहीं हो पाता। वह जीवन ऐसी ऊँचाई पर ले जा चुके होते हैं कि वह तक सोच पाना कठिन हो जाता है, लेकिन ऐसे व्यक्तित्व पर लिखकर कहीं न कहीं हम अपने अंदर मानवीय गुणों का विस्तार कर रहे होते हैं। अपने अंदर की मानवीय दुर्बलता को दूर कर रहे होते हैं। पूनम जी पर लिखना मेरे लिए ऐसे अनुभवों से गुजरना है। स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा हंसराज ने भारतीय शिक्षा और संस्कृति का जो प्रसार भारतीय समाज में किया पूनम जी ने उसका विस्तार किया। आज देशभर में डी.ए.वी. की 900 से अधिक शिक्षण संस्थाएं हैं। बीस लाख से अधिक छात्र एवं साठ हजार से अधिक अध्यापक इस संस्था से जुड़े हैं। उनके साथ जुड़े लाखों लोग भी डी.ए.वी. के परिवार ही हैं। इतने बड़े शिक्षा संस्थान का नेतृत्व पूनम जी के हाथों में हैं। वर्तमान में आप डी.ए.वी. संस्था के प्रधान हैं। सूरी जी के कुशल नेतृत्व और दूरदृष्टि ने डी.ए.वी. संस्था को शिक्षा का ऐसा आईना बना दिया है जिसमें देशभर के किशोर और युवा पीढ़ी अपने-आपको सजाती-सँवारती है।

पूनम जी के व्यक्तित्व के किसी एक पक्ष पर लिखूँ उससे बेहतर

है उनके जीवन के विविध रूपों से आपका परिचय करवाऊँ। पूनम जी से मेरा परिचय लगभग दो दशकों का है। इस बीच उनसे जब-जब भी मिली हूँ उनके मिलनसार व्यक्तित्व और प्रेमी स्वभाव ने अंदर तक प्रभावित किया है। उनके चेहरे पर खेलती बच्चों जैसी निश्छल मुस्कान उनके व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावशाली बना देती है। इतनी बड़ी संस्था का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति के चेहरे पर कभी कोई शिकन मैंने तो नहीं देखी। उनके व्यक्तित्व से सकारात्मक ऊर्जा का ऐसा स्रोत फूटता है कि कोई भी प्रभावित हो सकता है। उनके पास बैठना अपने अंदर के सूख चुके ज्ञान के स्रोत को पुनर्जीवित करना है। अपने जीवन को दिशा देना है। अपने आपको अंदर तक समझना है। वेद, पुराण, ज्ञान, विज्ञान की सैकड़ों कहानियाँ उन्हें याद है। उनकी बातों में गरिमामयी सम्मोहन है जो सहज ही आकर्षित करती है।

स्वामी दयानन्द ने जिस वेद की ज्योति को जलाकर भारतीय समाज को अंधकार से ज्ञान की तरफ ले जाने का प्रयास किया साथ ही जाति-धर्म और कर्मकांड से दूर करने का प्रयास किया था, पूनम जी ने उस ज्योति को आज तक जीवित रखा है। वह ज्ञान के उस लौ को कठिनाई रूपी हवा के थपेड़ों से बचाकर आज तक रखे हुए हैं, बल्कि हमेशा के लिए संरक्षित कर दिया है। जिस वेद की महिमा दयानन्द ने गायी थी उन वेदों का अँग्रेजी में अनुवाद करवा कर पूरे विश्व में लोगों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना पूनम जी के जीवन का लक्ष्य है। जो आपने पूर्ण किया। पूनम जी यह जानते हैं कि आज भारतीय समाज जिस अवसाद, कुंठा, अज्ञान, द्वेष की भावना से गुजर रहा है उससे सिर्फ वेद-ज्ञान ही बाहर निकाल सकता है। वह पूरे विश्व का भ्रमण करते हैं। जगह-जगह जाकर भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हैं और अपने वक्तव्यों से दिशाहीन हो चुके समाज को दिशा देने का प्रयास करते हैं। पूनम जी का यह कार्य भारतीय समाज को वैदिक चिंतन से पुनः जोड़ने और अपने संस्कृति के प्रति लोगों का लगाव स्थापित करने की दृष्टि से निर्णायक है। आज वेदों का ज्ञान भारतीय समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक बन चुका है।

इक्कीसवीं सदी का युवा जब व्हाट्सएप और मोबाइल में उलझा हुआ है और संस्कृति, सभ्यता और समाज से विमुख हो चुका है तब भी पूनम जी का विश्वास टूटा नहीं है। वह जानते हैं कि यही युवा पीढ़ी एक दिन भारत को पुनः विश्वगुरु बनायेगा। आज जब माता-पिता, समाज सभी के लिए युवा पथभ्रष्ट दिखता है ऐसे में पूनम जी को सबसे अधिक भरोसा इसी युवा पीढ़ी पर है। पूनम जी का मानना है कि इक्कीसवीं सदी भारत की सदी है। वह मानते हैं कि हमारी युवा पीढ़ी हमसे अधिक जागरूक है बस उसे दिशा देने की आवश्यकता है। 1857 में स्थापित आर्य समाज ने जब-जब देश को विपत्ति में देखा उसके साथ खड़ा हुआ है तो आज कैसे छोड़ दे।

पूनम जी के अंदर दयानन्द और महात्मा हंसराज के व्यक्तित्व की ज्योति जलती है। वह आज भी डी.ए.वी. को और अधिक बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। व्यक्ति एक स्कूल, कॉलेज या संस्था का निर्माण कर अपनी व्यस्तता का परिचय प्रतिदिन देता है लेकिन पूनम जी के नेतृत्व में हजार संस्थाओं का दायित्व है। वह जानते हैं इसकी नींव विशाली है। बस उसका विस्तार करना है और वह



लगातार बिना थके कार्यरत हैं। उनकी डिक्शनरी में 'थकान' शब्द वर्जित है। 'रूकना' मना है। उनके जीवन का सूत्र है- 'चलना ही जीवन है, ठहरना मृत्यु है।' आज समाज को पूनम सूरी जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है जो प्रत्येक क्षेत्र में अपने परिवार और समाज को त्याग कर सम्पूर्ण दुनिया को ही अपना परिवार मानकर कार्य करे। जिसका एक मात्र उद्देश्य शिक्षित देश का विकास है।

सूरी जी ने वेदों का गहन अध्ययन किया है। उसका सार, मर्म और प्रभाव वह जानते हैं, इसीलिए वह लगातार वेदों का प्रचार-प्रसार करते हैं। गायत्री मन्त्र की महिमा तो पूरे विश्व ने स्वीकार की है। पूनम जी गायत्री मन्त्र को जीवदायिनी मन्त्र मानते हैं। वह जहां भी जाते हैं, खासकर युवा पीढ़ी के बीच तो 'ओम' को सृष्टि के आदि मध्य और अंत का आधार बताते हैं।

पूनम जी एक विख्यात शिक्षाविद, संस्कृति प्रचारक हैं। उनके प्रत्येक वक्तव्य में भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा झलकती है। वह अपने लेखन से भारतीय जनमानस में आ गई भौतिकवादी प्रवृत्ति से दूर होने की प्रेरणा देते हैं। उनका वक्ता रूप बहुत ही प्रभावशाली है। उनके वक्तव्य से ही पता चलता है कि उनके अंदर बसे ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। उनके वक्तव्य से उनके अध्ययन का भी पता चलता है। उनके वक्ता रूप का सबसे सार्थक रूप यही है कि उनके पास छोटी-छोटी कहानियों का अंबार होता है। उन कहानियों में जीवन को बदलने वाले तमाम सूत्र छुपे होते हैं। वेदों और संस्कृति के प्रति अपने प्रेम को वह पूरे भारतवर्ष में फैलाना चाहते हैं।

विमर्शों के इस युग में जब समाज का वैचारिक वर्ग वेदों, पुराणों और भारतीय संस्कृति के बारे में कुप्रचार कर रहा है और उसकी छवि को धूमिल करने का प्रयास कर रहा है ऐसे में पूनम जी दुगुनी ऊर्जा के साथ समाज में वेद-ज्ञान को प्रचारित करने का प्रयास कर रहे हैं। यह कहना गलत न होगा कि डी.ए.वी. संस्था का नेतृत्व पूनम जी हाथों में ऐसे समय में आया जब बाजारी संस्कृति और तकनीकी का बहुप्रयोग युवा पीढ़ी को विचलित कर भोगवादी बना रहा है। उनके अंदर बसे संस्कार को लील रहा है। कुछ लोगों द्वारा भारतीय संस्कृति के विषय में गलत तथ्यों का प्रचार किया जा रहा है। ऐसे में पूनम जी के कुशल नेतृत्व में डी.ए.वी. के स्कूल, कॉलेज एवं संस्थाएं बच्चों में वैदिक शिक्षा और संस्कृति के ज्ञान का विस्तार कर रहे हैं। पूनम जी ने जबसे डी.ए.वी. संस्थान का नेतृत्व स्वीकार किया है, डी.ए.वी. शिक्षा के क्षेत्र में नित नए आयामों को छू रही है।

कई बार ऐसा होता है जब मैं किसी समस्या में होती हूँ, जिसका निराकरण मुझे कहीं नहीं मिलता तो पूनम जी से बात करती हूँ और हर बार चकित होती हूँ कि उनके द्वारा दिया गया समाधान मेरी समस्या का न केवल निराकरण करता है बल्कि वैसी अन्य कई समस्या से निपटने का आत्मबल भी देता है। मैं आज जब उनपर लिखते हुए उनके व्यक्तित्व के विभिन्न के कई पहलुओं को याद कर रही हूँ तो ईश्वर से यह प्रार्थना भी कर रही हूँ कि उनके व्यक्तित्व का कुछ अंश मेरे अंदर भी विकसित हो। उनके ज्ञान का कोई पुंज मेरे अंदर भी प्रज्वलित हो।

मैं स्वयं एक ऐसे परिवार से आती हूँ जहां आर्य समाज के नियमों से जीवन यापन होता है। मैंने जब हंसराज कॉलेज में एक अध्यापक के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया तो मेरे अंदर के आर्यसमाजी

व्यक्तित्व को एक नई दिशा मिली। हंसराज कॉलेज में ही स्थित वेद मंदिर में मैंने अपने अध्ययन का केन्द्र बनाया। प्राचार्या का पद संभालने के साथ भी मैंने प्रत्येक माह उस मंदिर में हवन कराने का प्रण लिया। इसकी प्रेरणा भी मुझे पूनम जी से मिली। पूनम जी हवन की इस परम्परा को प्रत्येक घर तक ले जाना चाहते हैं।

पूनम जी सही मायने में भारतीय संस्कृति के अग्रदूत हैं। एक महान, चिंतन, वेदज्ञाता, शिक्षाविद, संपादक, लेखक, समाजसेवी, ओजस्वी वक्ता, महान कर्मयोगी जैसी उनकी कई छवियाँ हमारे मन में हैं। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि उनकी ऊर्जा बनी रहे। निश्चय ही उनके नेतृत्व में डी.ए.वी. संस्था महर्षि दयानन्द और महात्मा हंसराज के सपनों को साकार करने में सफल होगा। उनके व्यक्तित्व का प्रत्येक पहलू अनुकरणीय है। जीवन को सन्मार्ग की ओर ले जाने की प्रेरणा देता है।

- प्रधानाचार्य हंसराज कॉलेज, दिल्ली, मो. 9891172389

## तुमको प्रणाम है बार-बार

हे डी.ए.वी. के कर्णधार। तुमको प्रणाम है बार-बार,  
हे आर्यरत्न। हे पद्म श्री। तुम करते सभी को बहुत प्यार।  
वैदिक धर्म की ओ३म् पताका विश्वपटल को धूम रही,  
धरती से लेकर अम्बर सब करते तुम्हारी जय जयकार॥

डी.ए.वी. की ज्ञान की धारा के तुम सच्चे नायक हो,  
मानवता की सच्ची मूरत कर्मठता के धावक हो।  
नगरी नगरी धूम-धूम कर समरसता जो घोल रहे,  
ओ३म् नाम के दीवाने हो वेदों के तुम गायक हो॥

कहीं रचाते यज्ञ कहीं पर मोदी जी को लाते है,  
कहीं बैठकर आर्यों को जाम-ए-एकता पिलाते है।  
दयानन्द के दीवाने और डी.ए.वी. के परवाने,  
सूरी जी तो सब के हित में हित अपना बतलाते है।

कहीं शिविर है कहीं सम्मेलन कहीं ओ३म् की चर्चा है,  
देश धर्म और मानवता के हित में सारा खर्चा है।  
हे पद्मश्री। हे सूर्यवंशी। सूरी जी तुम युग नायक हो,  
पत्ता पत्ता जर्ज-जर्ज कर रहा तुम्हारी चर्चा है॥

दयानन्द का एक दीवाना वैदिक रथ पर धूम रहा,  
नगरी-नगरी द्वारे द्वारे अलख जगाता झूम रहा।  
अमृत जैसी मीठी वाणी सत्यार्थों से भरी हुई,  
डी.ए.वी. का ध्वज लेके आसमान को धूम रहा॥

प्रो. डॉ. कुलदीप सिंह आर्य,

संस्कृत विभागाध्यक्ष, डी.ए.वी. कॉलेज, अमृतसर

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को  
देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से  
<https://www.facebook.com/AjayTankarawala/>  
पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

# आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी: एक संस्था

□ जे.पी.शूर

**आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी पदमश्री, रत्न हैं अनमोल।**

**आर्य जगत के क्षितिज पर, नहीं उनका कोई तोल।।**

आर्य रत्न पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। निरंतर प्रयास करते हुए आर्य समाज तथा डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं को नई दिशा प्रदान करने के लिए प्रयासरत हैं। उनके दृष्टिकोण के अनुसार प्रतिस्पर्धा एवं तकनीक के इस आधुनिक युग में केवल और केवल वही स्थिर रह सकता है जो अपने आपको परिस्थितियों के अनुरूप ढालता रहता है और बदलता रहता है। इसी अवधारणा एवं सोच को अपना कर वह आगे बढ़ रहे हैं।

आर्य समाज द्वारा शुरु की गई सामाजिक परिवर्तन की महान क्रांति रूपी गंगा को न केवल देश में बल्कि पूरे विश्व में प्रवाहित करने के लिए डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के परम सम्मानीय प्रधान आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी ऋषिभगीरथ बन कर आर्य समाज की इस महान क्रांति में नवस्फूर्ति एवं प्रेरणा का संचार करते हुए आर्य समाज को सर्वोच्च शिखर पर स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प एवं वचनबद्ध हैं। अपने पाँच वर्ष की अल्पावधि में ही उन्होंने आर्यजगत् एवं शिक्षा जगत को नई बुलन्दियों पर पहुँचाने के लिए अपना अतुल्य योगदान दिया है। सर्वविदित है कि आज देश-विदेश में डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं की भरमार है। लगभग (900) नौ सौ से अधिक डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का सम्यक् व सुचारू संचालन आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के स्तुत्य मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

डॉ. पूनम सूरी जी की विशाल सहृदयता, दूरदर्शी सोच, पारदर्शिता, पांडित्य, गहन अनुभव, कड़ा अनुशासन, कर्मठता, सम्पर्क सहयोग, तन्मयता एवं तत्परता ने उन्हें उस मंजिल पर आसीन कर दिया है जिसके कारण वह आर्यरत्न कहलाएँ, खोज कार्यों के आधार पर डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की तथा पर्यावरण, शिक्षा तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में अभूत पूर्व योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा आपको पदमश्री सम्मान से अलंकृत किया गया है।

**शिक्षा जगत्:-** आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के कुशल मार्ग दर्शन में डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का कार्याकल्प किया जा चुका है और भविष्य में भी इन्हें अत्याधुनिक बनाने के प्रयास जारी रखे हुए हैं। निःसंदेह डी.ए.वी. का शिक्षा जगत् में एक छात्र साम्राज्य स्थापित हो चुका है। डॉ. पूनम सूरी जी के अनुसार डी.ए.वी. संख्या बल पर नहीं बल्कि गुणवत्ता में विश्वास रखता है। उनके अनुसार डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान गुणवत्ता बढ़ाने के लिए निरंतर नए खोज कार्य करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे में डॉ. पूनम सूरी जी शिक्षा को रोजगार उन्मुखी बनाने की दिशा में सतत् आगे बढ़ रहे हैं तथा उन्हें अपने इस महान मिशन में आशातीत सफलता भी मिल रही है।

**क्रीड़ा जगत्:** किसी जमाने में एक कहावत थी। पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होंगे खराब। आज यह कहावत अर्थहीन हो कर रह गई है। आज स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है। आज के संदर्भ में:-पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे-कूदोगे बनोगे जाँबाज।

डॉ. पूनम सूरी जी के अनुसार डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाओं में

खेल-कूद को शौक के तौर पर न लेकर शिक्षा का अभिन्न हिस्सा मान कर उसे प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी ध्येय को लक्षित कर आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी के दिशा-निर्देशानुसार शिक्षा के साथ-साथ समस्त खेलों को विकसित करने हेतु डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाओं में खेलों को भारत सरकार के खेल मन्त्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त हो चुकी है। डी.ए.वी. का छात्र अब सीधे राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में भाग ले सकती है।

**नैतिक मूल्य अवलोकन:-** मानव सभ्यता के विकास के साथ उन्नति और प्रगति तो बहुत हुई लेकिन नैतिक मूल्यों का पतन भी उसी गति के साथ हुआ। ईर्ष्या, द्वेष, नफरत वैमनस्य की दलदल में धंसता हुआ मानव, मानव न रह कर दानव बनता जा रहा है। रिश्ते-नाते तार-तार हो रहे हैं। ऐसे में आर्य समाजों और डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं ने नैतिक मूल्यों के पुनः अवलोकन हेतु आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के गतिशील मार्गदर्शन में समूचे राष्ट्र में डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं में बड़े पैमाने पर नैतिक मूल्य संगोष्ठियों के आयोजन कर शिक्षा के साथ-साथ नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था को सुनिश्चित किया गया है।

**जलसंरक्षण:-** सर्वविदित है कि जल संकट केवल राष्ट्रीय समस्या ही नहीं है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय समस्या है। विशेष रूप से पेयजल की समस्या दिन प्रतिदिन विकराल होती जा रही है। इस विकराल समस्या को दृष्टिगत करते हुए आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के सुचारू मार्गदर्शन में अखिल राष्ट्र में समस्त आर्य समाजों व डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाओं के सराहनीय सहयोग से समय-समय पर प्रोजेक्ट बूँद के माध्यम से जल को अनमोल तत्व दर्शाते हुए पेयजल के प्रति जन साधारण को जागरूक करने की दिशा में जल संरक्षण के लिए प्रेरणा प्रदान की गई ताकि जल का अंधाधुंध दोहन न करते हुए जल को व्यर्थ बहने से तत्काल रोकने के उपाये दर्शाए जाते हैं।

**पर्यावरण संरक्षण:** दिन प्रतिदिन बढ़ता हुआ प्रदूषण किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं अपितु समस्त मानव जाति के लिए घातक होता जा रहा है। आर्य समाज और डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाएं आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के नेतृत्व में प्रतिवर्ष पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन साधारण में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए समय-समय पर पर्यावरण संरक्षण के विषय पर सैमीनार आयोजित कर अधिक से अधिक पेड़ लगाने, वनों का कटान रोकने, वाहन-जनित प्रदूषण को रोकने, तथा ध्वनि प्रदूषण को रोकने के उपाय भी समय-समय पर दर्शाए जाते हैं। पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ. पूनम सूरी जी को महान पर्यावरणविद की संज्ञा दी गई है।

**समाज कल्याण एवं परोपकार:-** समाज कल्याण एवं परोपकार के कार्यों में बढ़-चढ़ कर तीव्रता लाने का काम आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी की देख-रेख में प्रति वर्ष विराट वैदिक सम्मेलनों में राशन वितरण, कंबल वितरण, निर्धन कन्याओं के विवाह, दिव्यांगों को ट्राई साइकिल वितरण, सिलाई मशीनों के वितरण, निःशुल्क चिकित्सा शिविर, रक्तदान शिविर तथा साक्षरता निरंतर संचालित किए जाते हैं। ये समस्त समाज परोपकार के कार्य निश्चित रूप से भारतीय समाज व राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करने में सहायक हो रहे हैं। डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा इस



दिशा में उठाए जा रहे कदम सर्वदा सराहनीय हैं।

**चरित्र निर्माण एवं वैदिक चेतना शिविर:-**आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के वरद आशीर्वाद व प्रेरणा से युवा पीढ़ी को चरित्रवान बनाने की दिशा में समस्त आर्य समाजों एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं में प्रति वर्ष चरित्र निर्माण एवं वैदिक चेतना शिविर आयोजित किए जाते हैं। इन चरित्र निर्माण एवं वैदिक

चेतना शिविरों के आयोजन से युवा पीढ़ी को सन्मार्ग पर लाने में बड़ी सफलता मिली है। डॉ. पूनम सूरी जी के अनुसार 'चरित्रवान बनो, महान बनो, इंसान बन कर भारती की शान बनो' अंत में आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी का समस्त आर्यजनों के नाम पर यह महान संदेश 'मुस्कराते रहो। सर्वदा हर्षाते रहो। यूं ही आप सभी के काम आते रहो।'

-निदेशक (पब्लिक स्कूल-1), डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकत्री समिति, नई दिल्ली

## महान अजेय योद्धा: श्री पूनम सूरी जी

□ चित्रा नाकरा

कुछ शब्दों और भावों की सीमा में, एक असीम व्यक्तित्व का वर्णन करना वैसे ही असम्भव है-जैसे अँजली में आकाश को रखना, कुम्भ में सारे सागर को भरना या प्रखर सूर्य को मुट्ठी में कैद करने की कोशिश करना सच कहूँ-काव्यों, महाकाव्यों में आकार लेने जैसा जीवन-दर्शन और व्यक्तित्व है श्री पूनम सूरी जी का।

आज इनके साथ एक लाख से भी ज्यादा सजग एवं सार्मथ्यवान कार्यकर्ता, चालीस लाख से ज्यादा स्नातक, तीस लाख से ज्यादा राष्ट्र का भविष्य युवा वर्ग, नौ सौ से अधिक संस्थाएँ अभय भाव लेकर खड़ी हुई है। विलक्षण है अनेकता में एकत्व का यह भाव। एक प्राण एक लक्ष्य का संकल्प। ये राष्ट्र के यशस्वी भविष्य की जिम्मेदारी अपने सशक्त हाथों में लेते हुए एक महान अजेय योद्धा की तरह विकृतियों, असमानताओं, अशिक्षा, पाखण्डों, अन्धविश्वासों से लौहा लेते हुए आगे बढ़ रहे हैं। शायद ऐसे ही व्यक्तित्व के सम्बन्ध में फिराक गोरखपुरी ने कभी लिखा था-

**मत सहल समझो इन्हें, फलक फिरता है बरसों।**

**तब खाक के पर्दे से इंशा उभरता है।।**

बहुत बार-सभाओं, संगोष्ठियों, सम्मेलनों तथा व्यक्तिगत रूप से भी इनसे मिलने तथा मार्गदर्शन प्राप्त करने के अवसर प्राप्त होते रहे हैं, इन्हें देखकर ऐसा अनुभव होता कि प्रधान जी में अवसर को ऐतिहासिक बनाने की अदम्य अग्नि है, **सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामयाः** का पावन विचार उन्हें प्रेरित करता चला आ रहा है।

**नेपोलियन ने कहा था-**“काव्यों और दन्तकथाओं के नायक इतिहास के तथ्यों और आँकड़ों से नहीं बनते, उनके पराक्रम में कुछ ऐसा होता है जो जादू की तरह जुबान पर चढ़ जाता है और एक पीढ़ी से आने वाली दूसरी पीढ़ी का हो जाता है। ऐसी ही विशेषताओं से प्रधान जी का सारा व्यक्तित्व भरा हुआ है।

ऋषिवर दयानन्द जी का आदेश है-सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए। आप इसी आदेश को लेकर वे चल रहे हैं-इसलिए इनके हृदय में आँकुचन नहीं, सम्प्रसारण की दिव्य ज्योति प्रदीप्त होती है, ये भेद द्वन्द्व नहीं सम्मान और स्नेह के भावों में विश्वास करते हैं, इनमें विद्वेष नहीं-विवेक और सहअस्तित्व की भावना महकती हैं, हिंसा नहीं, हितकामना से उनका शिवसंकल्प पूर्ण मन जागृत है। सभी से भ्रातृभाव समान्यस्य, स्नेहपूर्ण व्यवहार, आनन्द बाँटना, मुस्कुराने का मन्त्र देना ये इनके दैनिक जीवन का व्यवहार है।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं-

**यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन।**

**स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।**

अति उत्तम जन जिस पथ का वरण करते हैं-जमाने भर के लोग उन्हीं के कदमों के निशान में अपने सपनों की मंजिल खोजते हैं, उन्हीं को दीपस्तम्भ मानकर अथाह सागर में खोये हुए सफ़ीनों के नाविक साहिल तक आते हैं। प्रधान जी आज लाखों लोगों के आदर्श व पथप्रदर्शक बने हुए हैं लोग इन्हीं की तरह बोलना चाहते हैं, सोचना चाहते हैं, देखना चाहते हैं और सुनना चाहते हैं।

इनकी परिषद् बेहद सामान्यस्य का प्रतीक बनी हुई है, मानो विक्रमादित्य महाराज की राज सभा हो। एक तरफ बेहद अनुभवी एवं चिन्तनशील श्रीमान आर.एस. शर्मा, जी, डॉ. एन. के. ओवेराय जी, श्री प्रबोध महाजन जी, श्री रामनाथ सहगल, श्री टी.आर. गुप्ता जी वही दूसरी ओर जाबाज योद्धाओं की तरह डॉ. निशा पेशिन जी, श्री जे.पी. सूर जी, श्री एस.के. शर्मा जी, विराजमान हैं ये विलक्षण प्रतिभाएँ अपनी महामेधा एवं अनुभव का प्रयोग कर डी.ए.वी. आन्दोलन को क्रान्ति और नवनिर्माण का पर्याय बनाने में जुटी हुई है। आज सारी डी. ए.वी. संस्थाएँ नवीन प्रयोग धर्मिता का केन्द्र बनी हुई है, संसार में शिक्षा के क्षेत्र में जो भी नवीन घटित होता है और अपनाने योग्य होता है उस पर इनकी समग्र दृष्टि बनी रहती है।

आदरणीय प्रधान जी के सशक्त नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में समस्त डी.ए.वी. व आर्य समाज परिवार अटल हिमालय की तरह स्थिर है उसे कोई मौसमी हवा हिला नहीं सकती, विकृति के तूफान इन दीपों से टकराने का साहस नहीं रख सकते क्योंकि

न डर है इन्हें अब हवाओं का न खौफ है इन्हें अब तूफानों का सूरज को तोड़-तोड़कर मैंने ये दीये जलाये हैं।

सदियों से इनकी चौखट का धर्मदीप जलता रहा है हिमालय के महान योगी स्वामी योगेश्वरानन्द जी के मुख्य शिष्य प्रखर चिन्तक श्री आनन्द स्वामी जी महाराज के आध्यात्मिक विचारों की अँगुली थामकर इन्होंने धर्म और अध्यात्म का वो रसायन चखा है जिसको चखकर देवता अजर और अमर हो जाते हैं।

आज पूनम सूरी जी की देखरेख में डी.ए.वी. की उर्वरा भूमि से सजग सबल राष्ट्रभक्त, प्रखर बुद्धिजीवियों तथा कालजयी बलिदानियों की फसलें तैयार हो रही हैं जो अविद्या अज्ञान के घोर अन्धकार को चीर कर ज्ञान और प्रकाश का परचम लहरायेगी। कृष्णन्तो-विश्वमार्थम् के जय घोष से धरती के कण-कण को नभ मण्डल की एक-एक तरंग को दिया, करुणा की सौगात से भर देगी।

-प्रधानाचार्य वेद व्यास, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, विकासपुरी, नई दिल्ली-18

# आर्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र-श्री पूनम सूरि

□ श्रीमती अनुपमा शर्मा

आर्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र, महान ईश्वर भक्त, त्यागी, तपस्वी, कर्मयोगी, समाज सुधारक, ऋषि भक्त, डी.ए.वी. के सर्जक महान शिक्षाविद् श्री पूनम सूरि जी प्रज्ञ पुरूष हैं।

**‘भवति दिवसवृत्तिः सप्तसप्तिस्तथोष्णः,  
सतत-कलष-मध्यो दीव्यन्तीन्दुः क्षपायाम्।  
समजनि समवृत्तिः सर्वथा योऽकलंको॥**

अर्थात् सूर्य केवल दिन में प्रकाश करता है तथा स्वभाव से भी उष्ण है। चंद्रमा सकलंक है और रात को प्रकाशित होता है। उसी तरह आप सूर्य चंद्र से भी श्रेष्ठ हैं।

**नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्॥**

निश्चय ही मनुष्य से श्रेष्ठ और कोई जीवन नहीं है। महाभारत का यह कथन अक्षरशः सत्य है कि मनुष्य इस संसार में आता है और चला जाता है। वस्तुतः इस संसार में वही मनुष्य जीता है जिसकी कीर्ति सतत् विद्यमान रहती है। ऐसे ही आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरजी जी ने कम समय में अधिक से अधिक कीर्ति अर्जित की और डी ए वी को उच्चस्तर पर पहुँचाकर ‘डी. ए.वी. को एक जाना-माना ब्रांड’ बनाया। यदि शिक्षा की गुणवत्ता की बात की जाए तो आपके ही निर्देशानुसार शिक्षण गतिविधियों में संकलनात्मक व रचनात्मक गतिविधियों पर विशेष बल दिया जाता है। जिससे विद्यालयों का चहुँमुखी विकास हो रहा है। आपके ही मार्गदर्शन में समस्त डी.ए.वी संस्थाओं के कामकाजों को इन्टरनेट व संचार के माध्यम से कार्य करने को प्रोत्साहित किया गया व सभी विद्यालयों के कार्यालयों में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के द्वारा आज कार्य सुचारू रूप से किया जाता है। जिससे कागज की जरूरत समाप्त हो गई है और पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सकता है। समय-समय पर आपके निर्देशन पर पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए ‘वन महोत्सव सप्ताह’ के अंतर्गत वृक्ष लगाने के कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।

**‘मनसि डी.ए.वी, वचसि डी.ए.वी तथा कर्मणि डी.ए.वी’**

आपके निर्देशन में आज समस्त डी.ए.वी संस्थाओं में एकसम यूनिफॉर्म व्यवस्था लागू की गई जिससे विद्यार्थियों में एक जैसे मन, वचन व भाव द्वारा तर्गे उत्पन्न होती है। आज इस संस्था का जो विकास हुआ है उसे ‘एक प्रतीक चिह्न’ के माध्यम से दर्शाया गया है। आज देश भर में लगभग डी.ए.वी की लगभग 900 संस्थाएँ कार्यरत हैं।

आज प्रतिवर्ष समय-समय पर शैक्षिक परीक्षण किए जाते हैं तथा अनेक कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है जिससे अध्यापकों को शिक्षण की नवीन विधियों से अवगत कराया जाता है इसीलिए आपके द्वारा कहा गया है कि ‘डी.ए.वी का प्रत्येक शिक्षक धर्मशिक्षक है।’

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा व आर्य युवा समाज के अंतर्गत समस्त विद्यालयों में प्रतिवर्ष अनेक चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन किया जाता है जिससे विद्यार्थियों में नैतिक गुणों का समावेश हो और वह एक अच्छा इंसान बन सके। इन शिविरों में अनेक विद्वान व विदुषियों के आशीर्वाचनों को विद्यार्थी अनुग्रहित करते हैं और जीवन में उन मूल्यों को ग्रहण करने का प्रयास करते हैं।

आपके शब्दों में ‘मानव भगवान बनाता है और मानवता डी.ए.वी सिखाती है।’ यह उक्ति सटीक है क्योंकि यह संस्था विद्यार्थी के

सर्वांगीण विकास में सहायक है।

आपके द्वारा ही खेलों को नई पहचान मिली है। आज ‘डी.ए.वी स्पोर्ट्स’ में जिस विद्यार्थी का उत्तम प्रदर्शन होता है उन्हें ‘स्कूल फेडरेशन ऑफ इंडिया’ द्वारा जो प्रमाण पत्र दिया जाता है। आज उनमें संबद्धता है वह विद्यार्थी को आगे बढ़ने व लक्ष्य प्राप्त करने में सहायक है।

आपके मार्गदर्शन में प्रतिवर्ष योजनानुसार वार्षिक गतिविधियों व कैलेंडर का निर्माण किया जाता है और उसे संस्थाओं में लागू किया जाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से जीवन को जीना ही नहीं अपितु जीवन जीने के कौशल भी सिखाए जाते हैं।

आपके ही तत्वावधान में ‘मन की बात’ कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। जिससे आप देश भर के समस्त विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के साथ बैठक में भाग लेते हैं और उनके नए-नए विचारों को सुनकर नई-नई योजनाओं को लागू करते हैं जिससे आज डी ए वी अपने चरमोत्कर्ष मुकाम पर है।

समस्त भारत की डी ए वी संस्थाओं का कार्यभार आपके दिशा निर्देशों के अनुसार किया जाता है। आपकी दक्षता को ‘प्रबंधन गुरु’ कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रबंधन गुरु के रूप में आपकी भूमिका सराहनीय है। आपके द्वारा दिया गया मंत्र (मुस्कराते रहो) ‘मस्त रहो, खुश रहो, खुशहाल रहो, यह समस्त अध्यापक व अध्यापिकाओं को प्रेरणा देता है जिससे उनमें कार्य के प्रति नई ऊर्जा शक्ति का संचार होता है।

आपके दिशा निर्देश पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी ने 18 जनवरी 2013 को प्रोजेक्ट ‘बूँद’ का शुभारंभ किया और संदेश दिया कि जल की एक-एक बूँद कीमती है। इस अवसर पर डी.ए.वी स्कूलों के शिक्षकों व विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक, मानव श्रृंखला, प्लेकार्ड के द्वारा लोगों को जागरूक कराया। जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा पद्धति व सामाजिक उन्नति के लिए किए गए अनेक कार्यों की उपलब्धि के लिए ‘तीर्थाकर महावीर विश्वविद्यालय ने आपको अगस्त 2015 में ‘डॉक्टर ऑफ फिलोस्फी’ की उपाधि से सम्मानित किया गया। संचार मंत्रालय द्वारा भी आपको सम्मानित किया गया जिसमें सन् 2016 को आपके चित्र का पोस्टल टिकट का विमोचन किया गया।

डी.ए.वी कॉलेज प्रबंधकत्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, जयपुर में 11 अक्टूबर 2017 को नोबेल शांति पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी की भारत यात्रा का समागम कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा आपकी पावन प्रेरणा से ‘सुरक्षित बचपन, संरक्षित भारत’ इस मुहिम का आरंभ किया।

शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में अग्रणी कार्य के लिए भारत सरकार ने 13 अक्टूबर 2017 को आपको ‘पद्मश्री अवार्ड’ से सम्मानित किया गया।

**“न्यायात्यथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।”** अर्थात् धैर्यशाली व्यक्ति न्यायासंगत मार्ग से कभी विचलित नहीं होते।

अतः आपके अनुपम त्याग, तपस्या व समर्पण की भावना से यह संस्था दिन-दुगुना व रात चौगुनी उन्नति कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर देश में ही नहीं अपितु विश्व में आगे बढ़ती रहे, इसी कामना के साथ।

- प्रधानाचार्य एम.आर.ए.डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, सोलन



# ओजस्वी व्यक्तित्व के स्वामी पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी

□ वी.के. चोपड़ा

मानव जन्म क्यों और किसलिए? इस अर्थ के मर्म से बहुत दूर आज समाज अज्ञानता का पर्याय बन चुका है, आवश्यकता है बिखरते मानव मूल्यों की मिहिमा को भंग करते हुए विश्व बंधुत्व के नव प्रभात से मानव जीवन को परिभाषित करने की। शाश्वत सत्य है कि कुशल नेतृत्व ही परिवर्तन की लहर को आंदोलित करता है। इतिहास का रथ वही हॉकता है, जो एक कुशल सारथी की क्षमता रखता है। अतः सत्यं शिवं सुंदरम् की कामना से समाज-सृजन वही कर सकता है जिसने गृहस्थ जीवन में भी वीतरागी बनने का संकल्प लिया हो।

मेरा सौभाग्य रहा कि पद्म श्री डा. पूनम सूरी जी के सामीप्य एवं सान्निध्य का अवसर मुझे सदा प्राप्त होता रहा। उनका असीम स्नेह, प्रेम, आत्मीयता एवं एक अभिभावक की भाँति अमूल्य सुझाव मेरे कर्म-पथ के साथी रहे जिन्होंने मेरे मार्ग को निष्कण्टक ही नहीं किया वरन् नव आभा और नवोन्मेष विचारों से ज्योतिर्मय कर दिया। लेखनी पकड़ते ही अनेक अविस्मरणीय संस्मरण मेरे हृदय के उद्गारों को अभिव्यक्त करने हेतु आतुर हो उठे हैं। वस्तुतः जीवन उपलब्धियों का एक ऐसा ग्रंथ है जिसके प्रत्येक अध्याय में एक नवल एवं प्रेरक किसलय की सुगंधा विद्यमान है।

पद्म श्री डा. पूनम सूरी जी दृढ़ आर्य समाजी हैं और यज्ञोपासना में उनकी गहरी आस्था है, उनके द्वारा डी.ए.वी. मुख्यालय परिसर में भव्य यज्ञशाला का निर्माण करवाना इस आस्था का द्योतक है, जहाँ प्रत्येक माह विशेष यज्ञ का आयोजन किया जाता है इस उद्देश्य के साथ कि कार्यालय में कार्यरत जिन कर्मचारियों का उस माह में जन्मदिन है, उनका अभिनंदन किया जाए और विशेष आहुतियाँ समर्पित करते हुए उनके भावी जीवन की मंगलकामना की जा सके। इस अवसर पर प्रधान जी की उपस्थिति एवं स्वयं आशीर्वाद प्रदान करना कर्मचारियों के प्रति उनके असीम स्नेह का परिचायक है।

नव ऊर्जा, नव संकल्पों, नूतन तकनीक और नवाचारी गुणों से युक्त हमारे प्रधान डा. पूनम सूरी जी महान शिक्षाविद्-साहित्य, संगीत, कला और विज्ञान के पारखी हैं। उनके आवास पर एरोमॉडलिंग कार्यशाला की व्यवस्था और व्यस्ततम दिनचर्या में भी वहाँ कुछ समय बिताना विज्ञान और तकनीक के प्रति उनकी अत्यधिक अभिरूचि का प्रमाण है। रचनात्मकता एवं सर्जनशीलता उनके व्यक्तित्व का विशिष्ट गुण है। उनके प्रभावशाली नेतृत्व में 900 से अधिक डी.ए.वी. शिक्षा संस्थान अपनी गुणवत्ता के कारण शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बना सकें हैं। उल्लेखनीय है कि प्रधान जी की छत्र-छाया में गत चार वर्षों में 200 से अधिक विद्यालय डी.ए.वी. परिवार में शामिल हो गए हैं। डी.ए.वी. विश्वविद्यालय की स्थापना प्रधान डा. पूनम सूरी जी की विशिष्टतम उपलब्धियों में से एक है-जहाँ विद्यार्थीगण स्नात्कोत्तर डिग्री के अतिरिक्त शोध, अवेष्ण तथा खेलकूद के क्षेत्र में नए कीर्तिमान ही नहीं जोड़ रहे हैं अपितु राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। उनके सबल एवं प्रभावशाली नेतृत्व का परिणाम है कि आज डी.ए.वी. एक ख्याति प्राप्त संस्था के रूप में स्थापित हो चुका है। मुझे स्मरण आ रहा है कि जब मैं हिमाचल प्रदेश के एक डी.ए.वी. स्कूल का प्रधानाचार्य था तब प्रधान जी जब भी आते तो उनकी प्रबल इच्छा रहती कि वह दूर-दराज के विद्यालयों में जाए और अधिकांशतः वह ऐसा ही करते थे, अपने स्वास्थ्य की आवश्यकताओं को अनदेखा करते हुए हिमालय की दुर्गम पहाड़ियों पर स्थापित डी.ए.वी. विद्यालयों में वह जाते उनकी

उपस्थिति से विद्यालय का प्रत्येक सदस्य आनंदातिरेक से झूम उठता। प्रधान जी की यह अनुपम विशेषता है कि वह एक प्रेरणा स्रोत की भाँति उन डी.ए.वी. विद्यालयों में अवश्य जाते हैं जो ग्रामीण क्षेत्र में हैं अथवा जहाँ पहुँचना अत्यंत कठिन है। त्याग, तपस्या और परिश्रम उनके स्वाभाविक गुण हैं। शिक्षा एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके अमूल्य एवं उल्लेखनीय योगदान के कारण तीर्थंकर यूनिवर्सिटी ने प्रधान डा. पूनम सूरी जी को डाक्टर ऑफ फिलासफी की मानद डिग्री से सम्मानित किया है। आर्य रत्न डा. पूनम सूरी जी संस्था में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति के सुख-दुख को सहज ही अनुभव कर लेते हैं और संबल बन कर आश्रय देते हैं। बल्लभगढ़ के प्रधानाचार्य का पद भार ग्रहण करते हुए मुझे इसकी व्यक्तिगत अनुभूति हुई। माननीय प्रधान जी की प्रबल इच्छा थी कि आर्य समाज के सिद्धांतों का निर्वहन करते हुए समाज सुधार और राष्ट्रीय उत्थान हेतु कार्यक्रमों का शुभारंभ किया जाए। बाल-शोषण, दहेज प्रथा एवं भ्रष्टाचार जैसे विषयों पर गहन चिंतन आपके सामाजिक सरोकारों को रेखांकित करते हैं जिसके अंतर्गत अभावग्रस्त, अक्षम बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का भाव निहित है। आपके श्रीमुख से कहे वचन एवं आपके स्वप्नों को साकार करते हुए 'कोशिश' एवं इसी श्रृंखला में डी.ए.वी. साहिबाबाद में महात्मा आनंद स्वामी जी को स्मरणांजलि समर्पित करते हुए 'आनंद-ज्योति' जैसी प्रभावशाली योजनाओं का शुभारंभ किया गया जिसमें विद्यालय द्वारा बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा एवं यूनिफार्म की व्यवस्था की गई है तथा दोपहर के भोजन की व्यवस्था नियमित रूप से शिक्षकवर्ग द्वारा स्वेच्छा से की जाती है। इस पावन योजना को उत्तर प्रदेश के समस्त डी.ए.वी. विद्यालयों में भी आरंभ करने का आग्रह किया गया है इसके अतिरिक्त निर्धन परिवारों को आजीविका हेतु सहायता उपलब्ध कराना प्रधान जी के जीवन का परम उद्देश्य है। प्राकृतिक आपदाओं के संकट में भी राष्ट्र हित हेतु सर्वप्रथम सहायतार्थ उपस्थित होना उनके व्यक्तित्व का विशिष्ट गुण है। प्रधान जी मानव धर्म को ही सर्वोपरि मानते हैं इसलिए नैतिकता और मानवता उनके संकल्प के अनमोल सूत्र हैं।

प्राकृतिक संपदाओं के प्रति संवेदनशील होने के कारण ही माननीय प्रधान जी द्वारा 'बूँद' परियोजना का शुभारंभ किया गया। 'स्वच्छ भारत' एवं 'बेटी-पढ़ाओ' जैसी परियोजना को अग्रसर करते हुए तथा इस हेतु अपने शिक्षण संस्थानों से युवा ऊर्जा का सदुपयोग लेते हुए आपने जन जागरण की अलख जगाई है।

पारिवारिक मूल्यों को प्राथमिकता देना प्रधान जी के विशिष्ट गुणों में से एक है, यही कारण है उनसे मिलना एक उत्सव की भाँति मन में उल्लास भर देता है और इसी गुण के बल पर हमारे प्रधान जी ने समस्त डी.ए.वी. संस्थानों को एक सूत्र में पिरोया हुआ है। शिक्षा, समाज-सेवा, प्राकृतिक संसाधनों के प्रति संवेदनशीलता, एक विनम्र और अद्वितीय व्यक्तित्व के स्वामी माननीय प्रधान जी को भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' की उपाधि से अलंकृत करना एक महती एवं विशिष्टतम उपलब्धि है। हमारे प्रधान पद्म श्री डा. पूनम सूरी जी एक तेजस्वी और ओजस्वी व्यक्तित्व के स्वामी हैं। हमारी कामना है कि वह सदा ऐसे ही हमारा पथ प्रदर्शन करते रहें। उस महामना को हमारा कोटिशः प्रणाम! -प्रधानाचार्य, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, साहिबाबाद, गाजियाबाद

# आप ही है: जो विश्व को आर्य बनाओगे

□ डॉ. राजेश कुमार

डी.ए.वी. भारत का सबसे बड़ा असहकारी शैक्षिक आन्दोलन है। 21 राज्यों में डी.ए.वी. की ओ३म् पताका बड़े शान से लहरा रही है। डी.ए.वी. की इस अभूतपूर्व सफलता, विकास एवं समृद्धि का मूल आधार हैं परम श्रद्धेय, महान् शिक्षाविद्, आर्यरत्न, पद्मश्री से अलंकृत डॉ. पूनम सूरी जी। श्री सूरी जी ने आर्य समाजों एवं डी.ए.वी. संस्थाओं का जितना विस्तार एवं विकास किया वह इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा। सूरी जी के कार्यों का बखान करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है तथापि अपनी न्यूनमेधा एवं शब्दों की सीमा को ध्यान में रखते हुए मात्र कुछेक कार्यों की चर्चा करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

**डी.ए.वी. संस्थाओं का विस्तार:-** बहुत वर्षों से सुनते आ रहे थे कि डी.ए.वी. की लगभग 700 संस्थाएँ हैं लेकिन आपकी कर्मठता से कुछेक वर्षों में वह संख्या 900 के पार चली गयी आपके कारण ही छत्तीसगढ़ सरकार ने कई सरकारी शिक्षण संस्थाएँ डी.ए.वी. को प्रदान की और इसी तर्ज पर बिहार, झारखण्ड आदि कई प्रदेशों की सरकारें आपको बहुत सारी संस्थाएँ देने के लिए उपक्रम कर रही हैं जिसके कारण यह संख्या सहस्र होने वाली है।

**आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभाओं का विस्तार:-** आपके “संगच्छध्वं संवदध्वम्” विचारों के कारण आज 15 राज्यों में आर्य प्रादेशिक उपभाषाएँ सुचारू रूप से डी.ए.वी. का परचम लहरा रही हैं और बहुत शीघ्र ही ये संख्या बढ़ जाएगी। आर्य समाज डी.ए.वी. संस्थाओं की जननी है।

आप जी के सत्प्रयासों से प्रभावित होकर बहुत अधिक संख्या में समाजें प्रादेशिक सभाओं के साथ मिल गई और सबल हो गयीं आप जैसे महान् आत्मा, त्यागी एवं शहद जैसे संभाषी के द्वारा ही आज लगभग 650 आर्य संस्थाएँ आपने एकता के सूत्र में बाँध कर मोतियों का हार बना डाला।

**आर्य साहित्य का प्रकाशन:-** सभा के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आपके दिशा निर्देशन में संपूर्ण वैदिक साहित्य एवं आर्य साहित्य के विभिन्न पत्र पत्रिकाएँ सभा के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित करके सर्वसुलभ बनाए गये हैं और बहुत सी संस्थाओं में स्वतन्त्र रूप से वैदिक एवं आर्य ग्रन्थ के प्रकाशन की झड़ी लगाकर आम आदमी तक साहित्य को उपलब्ध करा दिया-इस दिशा में अमृतसर के डी.ए.वी. कॉलेज द्वारा प्रकाशित-महर्षि दयानन्द की राष्ट्र को देन, वेदों की विश्व को देन (दो भाग) सत्यार्थ प्रकाश की राष्ट्र को देन, वैदिक पथिक, आदि ग्रन्थ विशेष उल्लेखनीय हैं।

**प्रशिक्षण शिविरों का विस्तार:-** आपकी प्रेरणा के फलस्वरूप डी.ए.वी. का हर शिक्षक धर्म शिक्षक होना चाहिए अतः प्रान्तीय, क्षेत्रीय एवं जनपदीय स्तर पर बहुत से प्रशिक्षण शिविर अध्यापकों एवं चरित्र निर्माण शिविर छात्र छात्राओं के लिए आयोजित हो रहे हैं जिनसे डी.ए.वी. का मुख्य उद्देश्य पूर्ण हो रहा है।

**प्रचारकों का विस्तार:-** आपके आचरण व्यवहार एवं त्याग भाव के फलस्वरूप आर्य समाज का संन्यासी वर्ग, प्रचारक वर्ग एवं उपदेशक वर्ग डी.ए.वी. के साथ जुड़ गया। इस दिशा में दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार, उपदेशक विद्यालय टंकारा विशेष उल्लेखनीय हैं। इस दिशा में गुरुकुलों एवं मठों का एकीकरण आपकी राह देख रहा है।

**नई दिशा नया संकल्प समारोह दिल्ली:-** भारत के इतिहास में पद्मश्री सूरी साहब ने 14 फरवरी 2016 का दिन स्वर्णाक्षरों में लिख दिया जब नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली में लाखों की संख्या में आर्य जुटा कर महर्षि दयानन्द का जन्मदिन के अवसर पर भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी से उद्बोधन करवाया था। इतिहास में सम्भवतः ऐसा पहली बार हुआ था।

**एकता एवं समरसता के विस्तारक:-** आदरणीय सूरी साहब अपने व्यवहार, आचरण, कार्य एवं व्याख्यानों के माध्यम से सम्पूर्ण समाज में एकता एवं समरसता, सौहार्द घोलते हैं उनकी शहद जैसी ओजस्वी मधुर वाणी लोगों के दिलों तक जाती है उनका मुस्कुराता मुखमण्डल अनायास जनमानस को अपनत्व का जाम पिलाता है। यही कारण है कि बड़े बड़े योग ऋषि, महात्मा, धर्माचार्य नेतागण, अभिनेता गण और समाज सुधारक, विचारक, शिक्षाशास्त्री, अर्थशास्त्री, प्राचार्य, आचार्य, अध्यापक और छात्र, आपके पावन सानिध्य को पाकर शान्ति एवं आनन्द का अनुभव करते हैं।

**अन्य विचार:-** सूरी साहब ने डी.ए.वी. में अन्य बहुत से विस्तार किए जैसे संस्थाओं में आर्य पर्व मनाने की परम्परा, संस्थाओं में यज्ञ-शालाओ की स्थापना, विभिन्न शोधपीठों की स्थापना, भवनों का निर्माण एवं उनका नामकरण आर्यों महापुरुषों के नाम पर रखना, राष्ट्र हित में करोड़ों का दान, आपदा राहत कोष में दान देश के विभिन्न राज्यों के राज्यपालों एवं मुख्यमंत्रियों के साथ सम्मेलन, संस्कारी शिक्षा योजना आदि बहुत कार्य हैं जो शब्दों की सीमा के कारण अनिवर्चनीय हैं।

- प्रधानाचार्य डी.ए.वी. कॉलेज, अमृतसर

## आप ऋषि जन्मभूमि हेतु दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा “श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा” के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नेशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी है मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा दें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)



# बहुमुखी प्रतिभा के धनी-डॉ. पूनम सूरी

□ डॉ. वी.के.बड़थवाल

जिस प्रकार पूनम का चंद्रमा रात्रि के अंधकार को परास्त कर अपनी चाँदनी की शीतलता और रोशनी से समूचे विश्व को प्रकाशित कर देता है, उसी प्रकार शिक्षा-जगत में अपने ज्ञान और प्रतिभा की अद्भुत चमक फैलाकर अपने नाम को सार्थकता प्रदान करने वाला महिमामय व्यक्तित्व है-पद्मश्री पूनम सूरी जी का। पूनम सूरी जी के विषय में कुछ भी बताना या लिखना निश्चित रूप से सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। व्यक्तित्व में ऐसा तेज, जो बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर ले, वाणी में ऐसा प्रभाव कि हर कोई मन्त्रमुग्ध होकर केवल सुनता रहे। अपनी ओजस्वी वाणी में जिस ठहराव के साथ वे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के प्रिय वेदमन्त्र-‘ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानी परासुव यद् भद्रं तन्न आसुवा।’ का मंत्र का उच्चारण करते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो मन्त्र का एक-एक शब्द जीवंत हो उठा हो।

आर्य समाज में अगाध श्रद्धा रखने वाले डॉ. पूनम सूरी गाँधीवादी दर्शन में विश्वास रखने वाले महापुरुष महात्मा आनन्द स्वामी जी के पौत्र हैं। इसलिए आर्य समाज के नियमों के प्रति आस्था, सामाजिक कुरीतियों का विरोध, समाज-सुधार की भावना जैसे मूल्यों के साथ उनके बचपन की नींव रखी गई। बचपन के इन्हीं मूल्यों ने ही पूनम सूरी जी के रूप में एक ऐसी शिखरयुत समाज को दी जिनके जीवन का ध्येय शिक्षा को माध्यम बनाकर समाज के विभिन्न स्तरों पर विद्यमान अज्ञानता, अंधविश्वास व अन्य कुरीतियों को समाप्त करके समाज को नवीन तकनीक और वैज्ञानिक चिंतन-युक्त दृष्टिकोण प्रदान करना है। पूनम सूरी जी जहाँ एक ओर स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के प्रचारक-प्रसारक के रूप में समूचे विश्व में वेद, सत्य और धर्म के प्रचार-प्रसार को एक विश्वजनीन आंदोलन बनाने हेतु प्रयत्नरत हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिकतम तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा देकर, शैक्षणिक अनुसंधान को प्रोत्साहित कर शिक्षा-जगत में नवीन आयाम स्थापित करना उनके व्यक्तित्व के दूसरे पहलू को उजागर करता है।

डॉ. पूनम सूरी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। कहीं वे अपनी सादगी और सहजता के साथ ही आर्यत्व धर्म का निर्वाह करते हुए ‘कृण्वन्तो विश्वमार्यम्’ के मन्त्र को सार्थकता प्रदान करने का संदेश समूचे आर्य-जगत को दे जाते हैं, तो कहीं वे एक मार्गदर्शक और संस्थापक के रूप में शिक्षा-जगत को डी.ए.वी. विश्वविद्यालय (जालंधर, पंजाब) की अमूल्य सौगात सौंप देते हैं। डी.ए.वी. प्रबंधक समिति के अध्यक्ष के रूप में आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों को साकार करते हुए जो नवीन प्रतिमान स्थापित किए हैं, वे अविस्मरणीय हैं। डी.ए.वी. प्रबंधक समिति के अध्यक्ष तथा डी.ए.वी. विश्वविद्यालय, जालंधर के कुलपति के रूप में पूनम सूरी जी की दूरदर्शिता देश-विदेश में फैली डी.ए.वी. संस्थाओं में किए जाने वाले तकनीकी व शैक्षणिक अनुसंधानों के रूप में नजर आती है।



सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित कक्षाओं (Smart Classes,) academic audit, construction audit, वैश्विक स्तर पर विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के साथ गठबंधन ने डी.ए.वी. संस्थाओं को वैश्विक मंच पर एक पहचान दिलाई है। पूनम सूरी जी का नेतृत्व शिक्षा और तकनीक के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु मानवीय मूल्यों के उत्थान एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में भी अहम भूमिका निभा रहा है। सामाजिक कुरीतियों के विनाश तथा सामाजिक उत्थान को केन्द्र में रखते हुए आपके नेतृत्व में आर्य युवा समाज के द्वारा अनेक प्रभावी कार्यक्रमों का आयोजन कर

दहेज-प्रथा, कन्या-भ्रूण-हत्या, भ्रष्टाचार जैसी कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। युवा पीढ़ी को अपने मूल्यों व संस्कारों से जोड़ने हेतु ‘चरित्र-निर्माण शिविरों’ का आयोजन, प्राकृति संसाधनों के समुचित उपयोग का संदेश देते हुए प्रोजेक्ट ‘बूँद’, सामूहिक विवाह-समारोह, नदियों की स्वच्छता एवं ‘स्वच्छ भारत अभियान’ से जुड़ते हुए राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन समाज और देश के विकास में पूनम सूरी जी के योगदान की एक झलक प्रस्तुत करते हैं। माननीय कैलाश सत्यार्थी जी के ‘बचपन बचाओ’ अभियान से स्वयं तथा पूरे डी.ए.वी. परिवार को जोड़कर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि बुराई चाहे किसी भी रूप में हो और बुराई को समाप्त करने के लिए प्रयास देश के किसी भी कोने में हो रहे हों, महर्षि दयानन्द के अनुयायी अपने आर्यत्व का निर्वाह करते हुए उस आंदोलन का हिस्सा अवश्य बन जाएँगे। देश-प्रेम और सत्य के प्रति निष्ठा-भाव का परिचय पूनम सूरी जी के संपादन में प्रकाशित होने वाली पत्रिका ‘द डेली मिलाप’ से भी मिल जाता है।

देश और समाज के प्रति समर्पण के परिणामस्वरूप पूनम सूरी जी को समय-समय पर अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वर्ष 2017 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में आपकी अतुल्य सेवाओं के कारण जब ‘पद्मश्री सम्मान’ से सम्मानित किया गया तो समूचा डी.ए.वी. परिवार गौरवान्वित हो उठा। इसके अतिरिक्त आपको ‘आर्यरत्न’ की उपाधि से भी विभूषित किया गया है। विभिन्न पुरस्कारों के साथ-साथ विभिन्न संस्थाओं में अनेक महत्वपूर्ण पदों पर अपने कार्यभार को पूर्ण उत्तरदायित्व से निभाते हुए आप एक अद्भुत मिसाल कर रहे हैं। वर्तमान में पूनम सूरी जी ‘आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा’ तथा ‘आर्य युवक समाज’ के अध्यक्ष के रूप में स्वर्णिम पाँच वर्षों का कार्यकाल पूरा करने के पश्चात् पुनः अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित होने पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, जसोला विहार, नई दिल्ली पूनम सूरी जी को हार्दिक बधाई देता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि पूनम सूरी जी के मार्गदर्शन में देश-विदेश में फैली डी.ए.वी. संस्थाएँ इसी प्रकार उन्नति के शिखर को छूती रहेंगी।

- प्रधानाचार्य डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, जसोला विहार, नई दिल्ली

# पदम्श्री डॉ.पूनम सूरी जी एक विश्वविख्यात शिक्षाविद्, ज्ञानपुंज, कर्मत्रहषि, आर्य सेवक

□ जोस कुरियन

आर्य गौरव, आर्यरत्न, समाजसुधारक, महान शिक्षाविद् ज्ञानपुंज पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी जिन्होंने विश्वबंधुत्व और खुशहाल विश्व की कल्पना की है और उस कल्पना को साकार करने के लिए निरंतर अग्रसर हैं। डॉ. पूनम सूरी जी! एक ऐसा व्यक्तित्व जो भारत की इस सभ्यता व संस्कृति को विश्व विचारधारा बनाकर चारों ओर कल्याण और खुशियाँ बिखेरना चाहते हैं ताकि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को चरितार्थ करते हुए समस्त भारत को एक सूत्र में बाँधा जा सके। वेदों के प्रति आपकी असीम श्रद्धा है। प्राचीन वैदिक परम्परा को ध्यान में रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव, समय बद्धता और शुद्ध आचरण के साथ डी.ए. वी. विद्यालयों के माध्यम से आर्यसमाज के सिद्धांतों का विजय वैजयन्ती फहराया।



आर्य समाज के प्रचार-प्रसार तथा देश सेवा के लिए आपका संकल्प, अथक तपस्या, वैचारिक उच्चता, सत्यप्रियता और सात्विकता विरले ही लोगों में देखने को मिलती है।

जिस प्रकार नदियाँ हमें अनवरत गतिशील होने का संदेश देती हैं, ठीक उसी प्रकार डॉ. पूनम सूरी जी भी अपने साथ कार्यरत निर्देशक, प्रधानाचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाओं, विद्यार्थियों और गैर शैक्षणिक कार्यकर्ताओं को भी अपनी ही तरह पूरी गतिशीलता, कर्मठता, दूरदर्शिता, समरसता, स्पष्टता तथा समभाव के साथ कार्य करने के लिए निरंतर प्रेरित करते रहते हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि आप सिर्फ एक उपदेशक ही नहीं बल्कि महान कर्मयोगी हैं।

आप देश सेवा से प्रेरित होकर, भारत सरकार से हाथ मिला कर, मुश्किल और कठिन कार्य भी अपने कंधों पर लेने के लिए उत्सुक और तत्पर रहने वाले कर्मठ व धैर्यवान व्यक्ति हैं। डी.ए.वी. संस्था के सभी कार्यकर्ता आपसे इतने प्रेरित और प्रभावित रहते हैं कि आपको अपना आदर्श मानकर स्वयं को धन्य समझते हैं। आप उद्देश्य प्राप्ति हेतु निरंतर निःसंकोच भाव से आगे बढ़ते रहते हैं।

मानव जीवन के उच्च आदर्शों के लिए आप अपने लोगों का आह्वान करते हैं, उन्हें प्रेरित करते हैं। आपके प्रत्येक कार्य में विश्वबंधुत्व का भाव तथा सम्पूर्ण भारत का सपना झलकता है। हम सभी आपके पद-चिह्नों पर चलने के लिए सदा लालायित रहते हैं।

सम्पूर्ण मानव कल्याणार्थ आपकी विशालहृदयता, स्नेह, पवित्रता, प्रगतिशीलता सभी कार्यक्रमों में दृष्टिगोचर होती है। आपके प्रभावशाली, प्रगतिशील नेतृत्व में आज डी.ए.वी. कार्यशालाएँ अभूतपूर्व कार्य कर रही हैं। साथ ही छात्र-केन्द्रित तथा गुणवत्ता युक्त शिक्षा पर बल दिया जाता है। स्मार्ट क्लास, शैक्षणिक सुधार, विश्वस्तरीय शिक्षा के साथ समन्वय, भारतीय और वैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली छात्रों के चहुँमुखी विकास का मार्ग है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली की ओर यह एक सराहनीय कदम है।

यह सत्य है कि नौ सौ से अधिक शिक्षण संस्थाओं को सुचारू रूप से चलाना सहज कार्य नहीं है परन्तु जिस सरलता और सफलता से आप कार्यों को सम्पन्न करते हैं वह सबके लिए प्रेरणास्त्रोत है। आपके भाव, विचार, भाषण, क्रिया-कलाप को देखकर कहा जा सकता है कि आप एक महान शिक्षाविद् हैं जिनके पद-चिह्नों पर चलकर हमें गर्व महसूस होता है। आपके प्रत्येक भाषण में आपके उच्च विचारों की झलक दिखाई देती है।

जब से आपने पदभार सँभाला है आपके द्वारा संपादित कार्य और सफलताएं आपके दृढ़ व्यक्तित्व का प्रतिफल है। आपका यही व्यक्तित्व आपके एक अटल आर्यसमाजी बनाता है। आर्यसमाज के नियमों का पालन, श्रद्धा, भक्ति, धैर्य और परमात्मा के चरणों में समर्पण भाव, आपको आंतरिक शक्ति दिलाता है। आपका ईश्वर की सर्वव्यापकता पर अटूट विश्वास है। आप हर कार्य प्रारंभ करने से पहले एक पल भगवान की प्रार्थना करते हैं और सभी का आह्वान करते हैं कि सब साथ मिलकर-ओ३म् विश्वानि देव सवितर्युरितानि परासुवा। यद् भद्रं तन्न आ सुवा। यह ईश वंदन करें।

यह आपकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति को दर्शाता है वरना कोई साधारण व्यक्ति अद्भुत सफलता के साथ इतने बड़े कार्य को सम्पन्न करने में सक्षम नहीं हो सकता।

डी.ए.वी. संस्थाओं में कार्यरत हजारों अध्यापक-अध्यापिकाओं, लाखों विद्यार्थियों पर ईश्वर की कृपा है कि हमें एक ऐसे व्यक्ति का मार्गदर्शन मिला है जो ईश्वर के वरदान समान है। समस्त डी.ए.वी. परिवार आपके संरक्षण में अपने आपको सुरक्षित, गौरवान्वित और सौभाग्यशाली समझता है। यदि हम डी.ए.वी. के इतिहास को देखते हैं तो पाते हैं कि आपके द्वारा ईमानदारी व सत्यनिष्ठा से किए गए प्रयत्न के फलस्वरूप पिछले कुछ वर्षों में डी.ए.वी. के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे शिक्षण पद्धति, तकनीकी शिक्षा, शैक्षणिक तथा अन्य राष्ट्रीय विकास कार्यों में कई गुना सफलता प्राप्त हुई है। आपकी अध्यक्षता में आज हम एक बड़ी मंजिल की ओर बढ़ते हुए दिखाई देते हैं।

आपके व्यक्तित्व में सम्पूर्ण भारत का सपना स्पष्ट दिखाई देता है। आपका हर कार्य मानव कल्याण से जुड़ा रहता है। आपका पांडित्य, स्पष्टवादिता, निर्णायक क्षमता, कार्यप्रणाली, सर्वधर्म समभाव, वैचारिक समानता, दूरदर्शिता, समरसता आपको समाज में उच्च स्थान प्रदान करती है। आपका शांतचित्त व्यवहार किसी को भी प्रभावित करने के लिए काफी है। आपके उद्गार "स्वस्थ रहो, व्यस्त रहो, मस्त रहो"-हम सब के लिए सदा प्रेरक रहेंगे।

हे मानव जाति के श्रेष्ठजन! शक्तिपुंज, आर्यवीर, कुलदीप, आर्यपुत्र, कुलश्रेष्ठ, समाज सुधारक, शिक्षाविद्, प्रेरणास्त्रोत आपको हृदय से शत्-शत् नमन।

- क्षेत्रीय निदेशक व प्रधानाचार्य (पश्चिम क्षेत्र), नैरूल न्यू मुम्बई, महाराष्ट्र

---

# **"The sun Illuminates the sky and the entire mankind is always on its diurnal course."**

**□ Anita Ahuja**

Dr. Punam Suri is The SUN emitting grace and rays of blessings to all by his benevolent presence. Leading the conglomerate of DAV Institutions, our most honorable President, Dr. Punam Suri Ji has been a man of utmost clarity and an illustrious vision. However, it will not be an overstatement if we say that the journey of SBDAB has been a celebration with Dr. Suri's unflinching support and vision of building an institution par excellence.

The escalation of Suraj Bhan DAV Public School from the cornered corridors to a full-fledged, urbanized school owes much of its success to the ethical forebodings of this man of strength and character. The earliest association of Dr. Suri with the school dates back to the times when SBDAB was in its toddler stage in the late 80's. The next door neighbour walked into the corridors of the school with his eternal dreams and the undying passion of Aeromodelling which were unflaggingly transmitted into the young SBDABians to propel their engines to paradigm heights. The students not only looked forward to this session of interaction but also keenly waited for the periodic visits to the aerodrome which were conscientiously arranged. Those were the days of sheer bliss! When the pleasant memories run through our minds, we blossom with the fragrances of smiles and laughter.

Dr Punam Suri has always been a beacon of light and his perpetual guidelines took a new course after he was deputed as the Manager of our school and the Secretary of DAVCMC. His foresight, fair-mindedness and painstaking efforts for the benefit of the students and the school instantly gained immense admiration and respect for him. I still remember the day when, on one occasion, he was addressing the staff with his ever-amusing anecdotes and he gave us an adage "Keep Smiling" which was to become synonymous with his unparalleled personality in the coming years. With the Midas touch of his light heartedness, he could create a bond with anyone within few seconds of interaction. The glimpses of his large hearted hospitality was evident during the time of the wedding of his children, when he extended the personal invitation to each and every member of the school and we all were closely knit as one SBDAB Family.

**"Make big plans for they have the power to stir the soul".**

The association of the trio-SBDAB, Arya Samaj, Vasant Vihar and Dr. Suri has been deep and meaningful. Many

programmes of Arya Samaj were held in the school premises under the able guidance and the indelible support of Dr. Suri. He is a staunch believer of Arya Samaj values and leaves no stone unturned to motivate people to abide by its teachings.

Dr. Suri has been an active participant and a great social worker all through his life. Health and Welfare of the people is always his top priority. With a hope to provide nominal proper healthcare facilities to the masses, Dukhniwaran Samiti, Vasant Vihar was formed. This achievement led way to the opening of Anand Aarogya Hospital at Mandir Marg. A lot of initiatives were undertaken involving the masses at various levels to gain the public attention whether it were the burning issues of the society or the contribution in situations of national crisis. Blood Donation camps, Project Boond, Tree Plantation Drives were organized successfully in the school premises under his able guidance. DAV is known as a brand now and has grown in multitudes in popularity. DAV Anthem, DAV United, Intellectual Hub are legendary initiatives to name a few. It is a remarkable achievement that currently 920 DAV Institutions worldwide and the DAV University are running successfully and has achieved a benchmark for its promotion in Higher Education.

The grand Anandotsav which is now celebrated with great pomp and show was initiated decades ago in the school premises of SBDAB when it was visualized that something should be done to discover the latent talent and skills of the students.

Value Based education is the chief mandate of DAV Institutions and special stress has been laid to educate the students with values and morals essential for a worthy life. Recognizing the pivotal role of teachers in ensuing student centric learning and holistic child development, Dr. Suri under the aegis of DAVCMC, has designed training programmes in multiple areas to support teachers across diverse classrooms to contribute to effective and joyous learning for the believers that, 'life is a continuous learning experience.. Hence training programmes for teachers growth at all levels are organized in the form of CBP, PEP and EEDP.

Unflinchingly, Dr. Punam Suri walks with the dint of determination in his lofty ideals, beliefs and spirits. DAV Family feels privileged to work under the flagship of this legendary figure.

**- Principal, Suraj Bhan DAV Pub. School,  
Vasant Vihar, New Delhi-110057**

# यज्ञीय व्यक्तित्व एवं प्रबंधकीय कौशल के धनी पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी

□ अर्जुनदेव चड्ढा

डीएवी प्रबंधन समिति के चैयरमेन पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी के यशस्वी कार्यकाल के पांच वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। इन पांच वर्षों के कार्यकाल में डी. ए.वी. जी ने जिस प्रकार से नित नई उँचाईयों को छुआ उसमें आपका अथक परिश्रम, आशावादी दृष्टिकोण, विनम्रता और वैदिक सिद्धांतों के प्रति मन में अगाध श्रद्धा ही प्रमुख कारण है। पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के व्यक्तित्व को यदि एक शब्द में अभिव्यक्त करूँ तो वह है यज्ञीय व्यक्तित्व। यज्ञ की इदंन मम की परोपकारी भावना से कार्य करते जाना ही मुझे आपके जीवन दर्शन का सिद्धांत प्रतीत हुआ। शायद यही कारण है कि जो यज्ञ आपके नित्य प्रतिदिन के जीवन का अभिन्न अंग रहा है डी.ए.वी. के प्रधान बनते ही वह यज्ञ विराट स्वरूप में डी.ए.वी. संस्था में नजर आने लगा। डी.ए.वी. में यज्ञ अपनी संस्थापना काल से ही होते रहे हैं और डीएवी की धार्मिक शिक्षा का अभिन्न अंग रहा है। परंतु डी.ए.वी. में विभिन्न स्थानों पर यज्ञ महापर्वों का आयोजन, यज्ञों पर प्रवचन तथा विद्यालय यज्ञ कार्यक्रम में अधिकाधिक छात्रों की भागीदारी बढ़ाने का जो कार्य वर्तमान में चल रहा है वह केवल मात्र यज्ञ के प्रति आपकी अतुलनीय श्रद्धा एवं आस्था का ही परिणाम है। आनंद पर्व, समर्पण पर्व, आओ यज्ञ करें जैसे पर्वों के सृजन ने डी.ए.वी. को यज्ञीय धूम से ओतप्रोत कर दिया। बहुकुण्डीय यज्ञों के आयोजन से डी.ए.वी. नवीन वैदिक युग का सर्जक बनकर उभरा तो इसमें पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी की यज्ञीय भावना ही बलवती रही है।

मेरी डॉ. पूनम सूरी जी से प्रथम भेंट भी कोटा में आयोजित यज्ञीय कार्यक्रम में हुई। कोटा में आपके आगमन पर आपसे मिलकर ऐसा लगा कि हमारी मुलाकात आज की नहीं वर्षों की रही हो। अद्भुत व्यक्तित्व के धनी सूरी जी जिससे मिलते हैं उसे अपना बना लेते हैं।

उनसे कोटा में मिलते समय मुझे अपनी युवावस्था की एक घटना का स्मरण हो आया था। बात उन दिनों की है जब 1967 में देश में गौरक्षा के लिए बड़ा आंदोलन चलाया गया था। मैं भी गौरक्षा आंदोलन में कूद पड़ा और दिल्ली के लिए कूच किया। दिल्ली में ही हमें गिरफ्तार कर लिया गया तथा तीन दिन तिहाड़ जेल में रखने के बाद मुझे पंजाब की नाभा जेल भेज दिया गया। जेल में रहते हुए एक दिन दयानंद मठ दीना नगर के पूज्य स्वामी सर्वानंद जी महाराज ने वार्तालाप में मेरा परिचय पूछते हुए पंजाबी में कहा कि “चड्ढे ते राजस्थान विच होंदे नई, तू कित्थे दा है” तो मैंने बताया कि मैं मूलतः पाकिस्तान के जिला केमलपुर, तहसील तलागंग और ग्राम तराप का रहने वाला हूँ। इस पर स्वामी सर्वानंद जी ने कहा कि एक बार तराप गांव में तो मैं और महाशय खुशालचंद (आनंदस्वामी) आर्य समाज के उद्घाटन के अवसर पर गये थे। वहां एक नौजवान रामलाल चड्ढा ने हमें बुलाया और हमारी बड़ी सेवा की। जब मैंने यह बताया कि मैं उसी तराप गांव वाले रामलाल चड्ढा का पुत्र हूँ तो उन्होंने मुझे अपने सीने से लगा लिया।

वर्षों बाद जब कोटा में मैं डॉ. पूनम सूरी जी से मिल रहा था तो उस समय नाभा की जेल में स्वामी सर्वानंद जी महाराज द्वारा कही गई घटना का सीन मेरे मन और मस्तिष्क को संकृत करते हुए पीढ़ीगत स्नेह की उस असीम आत्मीय आनंद का अनुभव कर रहा था जो कभी मेरे पिताजी और पूनम सूरी जी के दादाजी खुशालचंद (महात्मा आनंद स्वामी) के बीच मिलन के अवसर पर रहा होगा।

श्री पूनम सूरी जी के साथ इस प्रथम मिलन में ही मुझे लगा कि इस व्यक्तित्व के अंदर कुछ अलग और अधिक करने की आग है। मुझे संगठन सूक्त के कवितांश की पंक्तियां “हो विचार समान सबके चित्त मन सब एक हो” की वैदिक भावना प्रतिभाषित हुई। सबको साथ लेकर कार्य करने की विलक्षण सोच ने ही डी.ए.वी. के इतिहास में डॉ. पूनम सूरी को सर्वोच्च बना दिया है।

जीवन में संस्कार की महत्ता को डॉ. पूनम सूरी जी ने गहराई से समझा और अनुभव किया कि जीवन में इन संस्कारों के उद्भव में यज्ञ की भूमिका सर्वोपरि है। इसलिए अपने कार्यकाल में डीएवी में आपने ऐसे प्रयास किए कि अधिकाधिक छात्र-छात्राएं और उनके अभिभावकों को यज्ञ से जोड़कर यज्ञ करने के लिए प्रेरित किया। दूसरों के जो काम आए उसे इंसान कहते हैं। मानवता के प्रति करुणा, दया और सहयोग के यह गुण श्री पूनम सूरी के व्यक्तित्व के अंतरमन में गहराई तक समाये हुए हैं।

**पांच साल- बेमिसाल:-** आर्य शिरोमणि डॉ. पूनम सूरी जी के नेतृत्व में डीएवी के पांच साल-बेमिसाल रहे हैं।

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के अंतस् में एक कुशल प्रशासक भी छिपा हुआ है। अपने प्रबंधकीय कौशल से पांच वर्षों से भी अल्प कार्यकाल में डीएवी ने उल्लेखनीय सफलताएं अर्जित की। आपके कार्यकाल में 750 से अधिक शाखाओं वाले डीएवी रूपी वटवृक्ष ने पल्लवन करते हुए लगभग 900 से अधिक शाखाओं के साथ स्वयं को और अधिक विराट बनाया है। डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी की स्थापना आपके प्रबंधन कौशल की ही देन है।

भारत की प्रांतीय सरकारों को आज डी.ए.वी. पर आशातीत विश्वास है। स्वयं छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमनसिंह ने 74 सरकारी विद्यालयों का संचालन डी.ए.वी. मैनेजमेंट को हस्तांतरित कर इस विश्वास की पुष्टि की है। बिहार एवं राजस्थान की राज्य सरकार भी अपने कुछ विद्यालय डी.ए.वी. प्रबंधन को सौंपने का आग्रह कर चुकी हैं। यह पूनम सूरी जी कार्य कुशलता एवं दूरदृष्टि का ही परिणाम है कि डीएवी स्कूल एवं कालेज निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते नित नई उँचाईयों को छू रहे हैं। सभी के लिए समानता पूर्ण शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने की अपनी सोच को लेकर आपने पूरे देश में डी.ए.वी. का एक ही पाठ्यक्रम निश्चित किया और पूरे भारत में डी.ए.वी. के सभी स्कूलों में विद्यार्थियों के लिए एक समान गणवेश निर्धारित कर एकरूपता स्थापित की।

**Keep Smile:-** श्रीमान पूनम सूरी जी का एक मूलमंत्र है कीप स्माइल अर्थात् मुस्काराते रहो, दूसरों के चेहरे पर मुस्कराहट लाना, खुशियां बांटना यह अति प्रेरणाप्रद वाक्य लाखों लोगों का जीवन सुखद बना रहा है।

मेरी तो परमपिता परमेश्वर से इतनी ही प्रार्थना है कि वेदों की जिस पावन संस्कृति की पुनर्स्थापना आर्य समाज और डी.ए.वी. करना चाहते हैं डॉ. श्री पूनम सूरी जी के नेतृत्व में डी.ए.वी. में पढ़ने वाले हरेक छात्र-छात्रा के माध्यम से भारत के भावी नागरिकों तक वह अनवरत रूप से होती रहे।

-प्रधान आर्य समाज, विज्ञान नगर, कोटा (राज.)

4-प-28, विज्ञाननगर कोटा, मो. 09414187428



# जिसने ली आर्य समाज की सुध-पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

□ अरूण अब्रोल

आर्य समाज को अपनी 'माँ' कहने वाले प्रथम ऐसे डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी ही हुए हैं। आपने भरे मंचों से इस बात की घोषणा की है, कि डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संविधान में प्रबन्धन समिति का गठन केवल आर्य समाजों द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों पर ही आधारित है। लाहौर में इसकी स्थापना काल के समय ही यह निश्चित हो गया था कि डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति आर्य समाजी वटवृक्ष की एक शाखा बनेगी जिसका उद्देश्य उच्चतम आधुनिक/वैज्ञानिक शिक्षा को वेदों के अनुसार वैदिक मान्यताओं के संस्कार देते हुए आने वाले भविष्य के युवाओं को दी जायेगी। इसी कारण डॉ. सूरी आर्य समाज को डी.ए.वी. की 'माँ' कहते हैं।

उनके प्रधान पर आसीन होते ही डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के कार्यकलापों में वैदिक मान्यताओं की महक और आर्य समाज को हर मंच पर प्रमुखता देते हुए डॉ. पूनम सूरी जी दिखे। आपके मन में आर्य समाज और वेद प्रचार की जो तड़प है, निसन्देह आपके दादा महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की गोद में बैठकर प्राप्त संस्कारों के कारण ही है। आपके कार्यकाल के प्रथम वर्ष में ही डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रांगण में यज्ञशाला का निर्माण मेरी उपरोक्त बातों को प्रमाणित करता है। इसके अतिरिक्त प्रतिमाह के प्रथम कार्यालय दिवस का प्रारम्भ यज्ञ से ही होना निश्चित किया गया है। इस माह में जितने कर्मचारियों के जन्म दिवस आते हैं। मुख्य यज्ञशाला में यजमान के रूप में उपस्थित होते हैं। प्रधान जी के द्वारा पुष्प पंखुडियों द्वारा स्वागत किया जाता है और दीर्घायु के लिए विशेष मन्त्रों की आहुतियाँ दी जाती हैं।

मेरा जन्म कादियाँ जोकि महात्मा कर्मचन्द अब्रोल (मेरे दादाजी) की कर्मभूमि है। यहां पर 1919 में उन्होंने डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना सभी के सहयोग से की, जिसकी नींव महात्मा हंसराज ने अपने कर कमलों द्वारा रखी। वहाँ की आर्य समाज की स्थापना पं. लेखराम जी

द्वारा की गई। वहाँ उनका स्मारक भी विराजमान है, जिसमें प्रतिदिन यज्ञ तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। महात्मा कर्मचन्द जी का सम्बन्ध महाशय खुशहाल चन्द (महात्मा आनन्द स्वामी) से रहा। जिस स्कूल की स्थापना महात्मा कर्मचन्द जी ने की, उस स्कूल को अगले वर्ष 2019 में 100 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। 100 वर्ष पूर्ण होने पर महाशय खुशहाल चन्द (महात्मा आनन्द स्वामी) के पौत्र डॉ. पूनम सूरी जोकि डी.ए.वी. के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे हैं। उन्हीं के कार्यकाल के कर कमलों से स्वर्ण जयन्ती वर्ष सम्पन्न होगा। यह हमारा सौभाग्य होगा आर्य समाज के प्रति आपके दिल में जो तड़प है, उससे मैं बड़ा ही प्रभावित हुआ हूँ।

आप डी.ए.वी. के पहले ऐसे प्रधान हैं जिन्होंने स्कूल मुम्बई के सभी स्कूलों के प्राचार्यों को प्रेरणा दी कि वे आर्य समाजों में जाकर वहाँ अपने स्कूलों का कार्यक्रम करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित विश्व की पहली आर्य समाज काकलवाड़ी में जाकर अपने स्कूल के बच्चों द्वारा भजन एवम् सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। आपकी इस प्रेरणा से आर्य जगत् में इसका सकारात्मक संदेश पहुँच रहा है। परमपिता परमात्मा से पार्थना है कि आपकी दीर्घायु हो और निरन्तर आर्य समाज एवम् डी.ए.वी. को नजदीक लाते हुए वेद प्रचार के कार्य को बढ़ाते रहेंगे।

- ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट, मो. 09650605561

## विशेष सूचना

इस विशेष अंक के लिए लोगों में इतना उत्साह था कि हमारी पत्रिका के पन्ने ही छोटे पड़ गए। सम्पादक महोदय ने निर्णय लिया है कि सभी लेखकों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए कुछ लेखों को अगले अंकों में प्रकाशित किया जाएगा।

-व्यवस्थापक

## महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा)

### एवम् महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल

### अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम के अनुसार दसवी कक्षा तक साइंस और गणित पढ़ाने में योग्यता प्राप्त हो। □ शास्त्री वर्ग के छात्रों को काशिका, नामिक, अष्टाध्यायी आदि पढ़ा सके। अध्यापकों की आवश्यकता है। वेतनमान योग्यतानुसार। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण, चित्र एवम् आधार कार्ड सहित आवेदन भेजे।

आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,

डाकखाना-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

---

# To Sir.... with Regards

□ Shashi Kiran Gupta

The greatness of a person is adjudged on two very important yardsticks. First the influence he has on the generation he lives with and second the direction he has given to the course of history during his lifetime. On both these counts the influence and contribution of Dr. Punam Suri remains classic. Dr. Suri is credited with the modern thinking of the DAV institutions. He is guiding, moulding and institutionalizing the concepts of DAV. Today he is the unquestioned leader of DAV polity and fraternity. The entire DAV society is guided by his administrative acumen and cultural eminence. His influence on DAV and Arya Samaj is so overwhelming that we can call the present day period rightly as the beginning of 'Punam Suri Era'.

Even before he took over as President DAV CMC, as Secretary DAV College Managing Committee he visited the schools under his Chairmanship, took personal interest in their growth and development and it goes to his credit that he changed the entire parameters of thinking from DAV to Arya Samaj, to Arya Samaj to DAV that had instant effect on the psyche of the teachers and employees of DAV and it led to their participation in the spread of vedic philosophy, their dedication to vedic values with renewed vigour and enthusiasm. It strengthened their commitment and sincerity to their work and adoption of more modern and scientific aptitude. Within a span of just one decade he was rightfully considered as the future President and helmsman by the DAV society. It was imperative and it happened after the sad demise of late President Chopra ji, Dr. Punam Suri, immediately after taking over as President extended a friendly hand towards those who had opposed him in election and his truthful intensions resulted in melting all differences and the DAV Fraternity became one.

He has contributed both in raising the quantity and quality of educational institutions of DAV. His futuristic vision grounded to vedic values is a great source of inspiration and encouragement to all DAV faculty. Under his leadership the no. of institutions has grown from 700 to about 950 that includes public schools, colleges, art & science professional colleges, colleges of education, a chain of technical institutions, Ayurvedic College, Dental Colleges, a Vedic Research institution, several cultural centres in India and abroad and a DAV University. The per capita institutional development is mind blowing. For instance the Jharkhand Chief Minister requested Dr. Suri to take over 72 schools in his state which are now with DAV. These schools are situated in far flung naxlite areas and our President dare to visit these troubled areas himself. This courageous act on his part is inspiring and motivating for the Principals. In Punjab and Haryana- police schools are also run by DAV and similarly there are numerous project schools which have been handed over to DAV for quality run.

Dr. Suri is himself well versed in the use of latest technology and that is what he promoted in DAV Management Office and all institutions. The whole process and procedures

are computerized. The institutions and management offices are connected through computerized systems that resulted in huge saving of paper, cutting delays, quick decisions and enhancing efficiency of work.

As President DAV College Managing Committee, he has taken a very unique meaningful initiative 'Man ki baat'. In one to one meeting with the President the Principals of DAV institutions are encouraged to put forth their ideas, doubts, apprehensions and problems in front of the President directly. This human, encouraging approach helps in boosting of their moral, gaining confidence and working with a multiplied sense of belonging, commitment and sincerity of purpose.

Establishing DAV Centre for Academic Excellence to promote quality in the working and teaching learning processes of the schools is another enormous initiative of the President under which the comprehensive teacher development programmes for the in service DAV faculty is scheduled at the national level. Training, empowerment and value inculcation programmes for teachers have definitely resulted not only in enhancing of academic performance but also in enabling the teachers to work for the holistic development of the children - quality education in the true sense.

Besides these and many more administrative initiatives Dr. Suri is a socially aware and responsible person who is deeply committed to the social cause and he initiated many projects like Project 'Boond' to bring about social awareness about saving water, **Swachh School Swachh Bharat**, empowerment of women, girl child promotion, female infanticide, sustainable development, preservation of environment etc. The contribution of Rs. 2.50 Crores on behalf of DAV Society in Uttarakhand Relief Fund and a similar amount in PM Relief Fund were milestones in his journey of social sensitivity and responsibility.

Dr. Suri has aligned his life to the cause of DAV – of taking DAV movement forward by making critical and creative changes in the policies and their implementation and by introducing new meaningful initiatives- thus maintaining the Arya Samaj and DAV traditions in the best possible manner. He possesses all attributes for this colossal task. He is a visionary with progressive thinking- a man of unquestionable integrity, scientific temperament, and above all he has a skill in human engineering- I think he is the most effective and most popular President of DAV so far. When on 30th March, 2017 the Hon'ble President, DAV CMC, was conferred with the prestigious national honour, the Padam Shri in acknowledgement of his personal values and beliefs, for the stellar role he has played in steering DAV flagship in its challenging voyage, millions of hearts swelled with pride. Each and every DAVian was overwhelmed with joy and pride and sent their heartfelt greetings and best wishes To Sir... with regards.

-Regional Director Shimla, Himachal Pradesh

# जो जमाने को बदल दें: पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी

□ सुमन निझावन

लोग कहते हैं बदलता है जमाना अक्सर ।

मर्द वे हैं जो जमाने को बदल देते हैं ॥

इस कहावत को चरितार्थ करने वाले आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। महात्मा आनंद स्वामी जैसे कर्मयोगी और जन्मजात आर्यसमाजी परिवार में जन्म लेने वाले श्री पूनम सूरी जी सैद्धांतिक व व्यावहारिक रूप से आर्यसमाजी हैं। हर आम और खास के चहेते, हंसमुख व्यक्तित्व के धनी, अपने नाम के अनुरूप पूनम के चाँद की भाँति अपनी शीतलता व चाँदनी बिखेरने वाले प्रधान जी हर दिल अजीज हैं। आर्यसमाजी होने की सार्थकता को सिद्ध करते हुए ये शिक्षा के माध्यम से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की सद्भावना को साकार करने में अहर्निश प्रयत्नशील रहते हैं। इनके नेतृत्व में डी.ए.वी. संस्थाओं को एक नई दिशा व नई ऊर्जा मिली है। ऋषि दयानन्द के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए माननीय प्रधान जी ने सराहनीय व सार्थक प्रयास किए हैं। डी.ए.वी. विद्यालयों की बढ़ती संख्या व लोकप्रियता तथा डी.ए.वी. विश्वविद्यालय की स्थापना से यह सिद्ध हो गया है कि दृढ़ इच्छा, जमाने को बदलने की शक्ति के चलते कोई बाधा हमें विचलित नहीं कर सकती।

ओजस्वी आभामंडल से प्रदीप्त चेहरे पर छाया आत्मीयता का भाव पराए को भी अपना बनाने की सामर्थ्य रखता है। यह हमारे लिए सौभाग्य एवं हर्ष का विषय है कि माननीय प्रधान जी ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान पद के रूप में सफलतापूर्वक 5 वर्ष पूरे कर लिए हैं उनकी इस स्वर्णिम अध्यक्षता के नेतृत्व व मार्गदर्शन में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। डी.ए.वी. की स्थापना के समय से ही आर्यसमाज और डी.ए.वी. में वैमत्य रहा है।

मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ और अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करती हूँ कि-आर्यरत्न डॉ पूनम सूरी जी को पुनः सर्वसम्मति से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का निर्विरोध सभा प्रधान निर्वाचित किया गया। उक्त पावन अवसर पर मुझे भी अन्य सभासदों की भाँति आर्यसमाज, अनारकली के सभागार में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मान्य प्रधान जी के महान विचारों एवं कार्यों की एक लम्बी श्रृंखला ने मेरे मानस पटल पर विशेष प्रभाव डाला। माननीय प्रधान जी ने अपने सम्बोधन में, संगठन को और अधिक मजबूत बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि आर्य समाज को विघटन से बचाना आज की सबसे बड़ी चुनौती है। इसके लिए प्रेम, सौहार्द और सहयोग का वातावरण बनाने का उत्तरदायित्व हम सब पर है। आज हमें पूरी तरह से आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगना होगा। हमें आदरणीय प्रधान जी के सबसे महत्वपूर्ण कार्योंद्देश्य शिक्षा में नैतिक मूल्यों के प्रसार और चरित्र निर्माण की प्रक्रिया को क्रियान्वित करना है। पूज्य, प्रेरक प्रधान जी के इस महान कार्योंद्देश्य को पूरा करने में हम सब 'मनसा वाचा कर्मणा' अपने आप को अर्पित करते हैं।

प्रधान जी समाज सेवा के क्षेत्र में तन-मन-धन से समर्पित रहते हैं। जब भी देश या समाज पर कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो प्रधान जी के निर्देशन में डी.ए.वी. की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। बाढ़ की

विभीषिका झेल रहे बिहार के लिए लगभग 3 करोड़ रुपये की नकद राशि भिजवाकर प्रधान जी ने मानवता की मिसाल कायम की है। महात्मा हंसराज जयंती के उपलक्ष्य में उनके द्वारा डी.ए.वी. विद्यालयों में रक्तदान शिविरों का आयोजन करवाना भी एक सराहनीय कदम है।

'बूँद प्रोजेक्ट' व 'नदी बचाओं' अभियानों के साथ जुड़ाव इनकी पर्यावरण के प्रति चिंता को उजागर करता है। इनकी कार्यशैली सबको साथ लेकर चलने की और परमार्थ हेतु सर्वस्व न्यौछावर करने की है। ये विकास के तात्कालिक लक्ष्यों की अपेक्षा दूरगामी विराट लक्ष्य को लेकर चलते हैं। डी.ए.वी. विश्वविद्यालय की स्थापना करना उनकी इसी सोच को परिलक्षित करता है। इसी से प्रभावित होकर बिहार, झारखण्ड व छत्तीसगढ़ की सरकारों ने भी अपने राज्यों के अनेक सरकारी स्कूलों को डी.ए.वी. को देने का निर्णय लिया और अब वे स्कूल भी विकास की पटरी पर लौट आए हैं। यह सब प्रधान जी के कुशल प्रबंधन का ही करिश्मा है। सच में इनका जादुई व्यक्तित्व सबको अपने पाश में बाँध लेता है।

'संकल्प से सिद्धि' उत्सव के आयोजन में भारत के प्रधानमन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी की उपस्थिति भी यह सिद्ध करती है कि अब डी.ए.वी. की गूँज भारतीय संसद के गलियारों में भी सुनाई दे रही है। पदमश्री पुरस्कार से अलंकृत होना किसी भी भारतीय नागरिक के लिए गौरव का विषय है। भारत के राष्ट्रपति द्वारा श्री पूनम सूरी जी को इस अलंकरण से अलंकृत किया जाना समस्त डी.ए.वी. परिवार के लिए अत्यंत हर्ष और सम्मान का सूचक है।

हरियाणा के सभी जिलों में डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल खोलना और उनका सुचारू रूप से प्रबंधन करना भी शिक्षा जगत की महत्वपूर्ण घटना है। ये सभी कार्य प्रधान जी के बहुआयामी और उन्नत व्यक्तित्व के कारण ही संपन्न हो सके हैं, इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है।

ये सब तो प्रधान जी के सामाजिक व सार्वजनिक जीवन से जुड़ी बातें हैं। इन सबसे ऊपर ये व्यक्तिगत संबंधों में भी बहुत ही गरिमापूर्ण हैं। हमेशा मुस्कराते रहना तथा औरों को भी 'Keep Smiling' का संदेश देना इनकी विशेषता है।

प्रधान जी के निर्देशन में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित डी.ए.वी. युनाईटेड नामक पत्रिका डी.ए.वी. संस्था के भूतपूर्व छात्रों को जोड़ने का एक शानदार प्रयास कर रही है जिसमें लगभग 40 लाख छात्र जुड़ चुके हैं। यह पत्रिका सभी डी.ए.वी. की संस्थाओं में वितरित की जाती है जिससे उन्हें पता चलता है कि डी.ए.वी. से शिक्षा प्राप्त छात्र विभिन्न विभिन्न क्षेत्रों में शानदार प्रदर्शन करके अपने देश व विद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

'एक सफल व्यक्ति के पीछे सदैव एक नेकदिल महिला होती है' इस कहावत को चरितार्थ करती हुई ममतामई मनी सूरी जी (प्रधान जी की धर्मपत्नी) वास्तव में उदारहृदया व नेकदिल महिला हैं। मुझे एक घटना याद आती है कि जब मैं विद्यालय के आवश्यक कार्य हेतु प्रधान जी के निवास पर गई थी। काम खत्म होते-होते शाम के पांच बज गए थे। मैं ने उसी समय मेरे लिए सैंडविच बनवाए और पैक करवाकर बड़े प्यार से कहा कि 'दिल्ली से कैथल जाने में कम

से कम 5 घंटे का समय लगता है। अगर रास्ते में आप खाने के लिए रूकोगी तो एक घंटा और लग जाएगा। इसलिए मैं रास्ते में खाने के लिए सैंडविच दे रही हूँ। इन्हें खा लेना।' उनके इस स्नेहमय व्यवहार ने मेरे अन्तर्मन को छू लिया।

प्रधान जी का समय प्रबंधन लाजवाब है। अपनी व्यस्ततम दिनचर्या में से भी वे समय निकाल कर सब की बातें सुनते हैं। मुझे अच्छी तरह से याद है जब उन्होंने कभी डी.ए.वी. विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को व्यक्तिगत रूप से बुलाकर उनकी समस्याओं व उपलब्धियों पर चर्चा की थी और उन्हें यह संदेश दिया था कि हमेशा बड़ी तथा सकारात्मक सोच रखो और ऐसा वही कर सकता है जो स्वयं इस प्रकार की सोच रखता हो।

प्रधान जी विद्यालय, विद्यार्थी और शिक्षकों के प्रति हमेशा संवेदनशील रहते हैं और उनसे जुड़ी हर समस्या के त्वरित निराकरण हेतु तत्परता से काम करने का प्रयास करते हैं। उनके समय, ऊर्जा और संसाधनों के सदुपयोग के लिए सभी डी.ए.वी. संस्थाओं को डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के साथ 'आन लाइन' जोड़ कर 'डिजिटलाइजेशन' का काम उनकी इसी सोच का परिणाम

है। शिक्षकों के शिक्षण में एकरूपता और शैक्षणिक उन्नयन हेतु समय-समय पर कार्यशालाओं का आयोजन करना उनकी उन्नत सोच और समाज के प्रति शिक्षाविदों की जवाब-देही का प्रतीक है।

प्रधान जी वास्तविकता के धरातल पर काम करने वाले हैं। उन्हें व्यावहारिक समस्याओं की समझ है। वे हमेशा कहते हैं कि शुरुआत भले ही छोटी हो लेकिन उसके पीछे छिपी हुई भावना बड़ी व पवित्र होनी चाहिए। वे गीता के 'कर्मयोग' के सिद्धांत में विश्वास करते हुए स्वयं को कभी कर्ता नहीं मानते। हमेशा यही कहते हैं कि ईश्वरेच्छा सर्वोपरि है। हमें तो बस काम करना है। यदि हम उनके संपूर्ण व्यक्तित्व व उपलब्धियों का उल्लेख करना चाहें तो पूरी किताब लिखी जा सकती है। जितना मैंने उन्हें समझा है वह ये है कि वे परमात्मा की सर्वोत्तम कृतियों में से एक हैं और हम सब परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें दीर्घायु व अच्छा स्वास्थ्य दें ताकि उनके सान्निध्य का हमें अधिक से अधिक लाभ मिल सके और शिक्षा जगत निरंतर नैतिक मूल्यों के धरातल पर बने विकास के भवन को बुलंदियों पर पहुँचा सके।

-प्रधानाचार्य एवं श्रेष्ठ निदेशिका, ओ.एस. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कैथल

### एक प्रेरणा

## परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा

## गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उद्गृह्य होने में आपकी आहुति होगी।

**एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।**

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि 'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा' के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

**टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

**-: निवेदक :-**

**शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)**

**रामनाथ सहगल (मन्त्री)**

## टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

**'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रुपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रुपये हैं।**

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

**-प्रबन्धक**



# बहुआयामी व्यक्तित्व-पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

□ अशोक कुमार शर्मा

दिव्य जीवन पाकर यदि देवकार्य समाज सेवा, परोपकार, पर-दुःख कातरता युक्त न हुए तो जीवन व्यर्थ ही है। किन्तु जो इस यज्ञीय नौका पर सवार हो जाता है वो स्वयं तो भव सागर तरता ही है। साथ ही अनेकानेक प्राणियों का तारक बन जाता है उनके जीवन की दिव्य ज्योति प्रकाश-स्तम्भ का कार्य कर भटके राहगीरों की मार्गदर्शिका बन जाती है। ऐसे महामानव हैं हमारे चरितनायक आर्य-रत्न, युवा हृदय सम्राट, वाग्मीप्रवर, प्रेरकनेतृत्वगुण-सम्पन्न सर्वश्री पद्म श्री डॉ. पूनम सूरी जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा व डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली।

**पारिवारिक पृष्ठभूमि:-** आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ऐसी गरिमायुक्त है जिसमें आध्यात्मिकता, दार्शनिकता, सात्विक समृद्धियुक्त बुद्धि-विलास, देशभक्ति व सेवा भाव का ऐसा अनुठा संगम है जो अन्यत्र दुर्लभ है। आपके पूज्य पितामह महात्मा आनन्द स्वामीजी आर्य समाज की विमल विभूति थे। मान्यवर आर्यश्रेष्ठ डॉ. पूनम सूरी जी ने उस पारिवारिक विरासत को आज तक न केवल संजोकर रखा है अपितु उसे यज्ञ सार सुगन्धि की तरह सर्वत्र विस्तार दिया है।

यूँ तो डॉ. पूनमसूरी जी के बहुआयामी व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में लाना मुझ असमर्थ-शब्दसामर्थ्य-अकिंचन के लिए सम्भव नहीं है। किन्तु उनके विमल पुरुषार्थ का यथासामर्थ्य वर्णन का प्रयास न करूँ तो कृतधनता के पाश में आबद्ध हो जाऊँगा। अतः उनके विमल यशश्चन्द्रिका की शीतल किरणों का प्रसार चाहता हूँ।

जैसे सूर्य उदय हुआ है या नहीं यह बात कहकर बतानी नहीं पड़ती है। इसी तरह यदि कोई व्यक्ति धर्मात्मा है तो उसका पता इस बात से लगता है कि उसके चारों ओर रहने वाले लोगों पर उसका सुखदायक प्रभाव पड़ता है या नहीं। अपने चारों ओर की व्यवस्थाओं में परिवर्तन करके वो अपनी उपस्थिति का अनुभव करा ही देता है। ऐसे जाज्वल्यमान पूज्य प्रधान जी ने अपने शैशव काल से ही इस कथन को चरितार्थ किया है-“होनहार बिरवान के होत चीकने पाता।” आपकी प्रारम्भिक शिक्षा मसूरी की सुरभ्य तलहटी में स्थित सेन्ट जोर्जेज पब्लिक स्कूल में हुई। वाणिज्य संकाय में स्नातक आप पंजाब विश्वविद्यालय से रहे। ब्रिटिश इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट लन्दन, यू.के. के आप अध्येता रहे।

**शिक्षाविद्:** माननीय डॉ. पूनम सूरीजी का पारिवारिक व्यवसाय की परम्परा होने पर भी आप शिक्षा के क्षेत्र में कीर्ति स्तम्भ की तरह प्रतिष्ठित डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाओं से दीर्घकाल से न केवल संबद्ध है अपितु अपनी समग्र शक्ति का सम्बल प्रदान कर नित नवीन ऊँचाइयों प्रदान कर रहे हैं। जहाँ देशभर के प्रतिभावान् छात्र नानाविध संकायों में अध्ययन कर देश सेवा में प्रस्तुत हैं। यह आपके शिक्षा प्रेम का प्रबल प्रमाण है। आपके नेतृत्व में शिक्षा की नवीनतम पद्धतियों व विधाओं के साथ नवीनतम तकनीकियों का प्रयोग डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं में अत्यन्त कौशल व सफलता पूर्वक किया जा रहा है।

**कुशल प्रशासक:-** आप सहृदय शिक्षाविद् होने के साथ-साथ एक नितान्त कुशल प्रशासक भी हैं। आपके प्रशासन की सर्वाधिक विशेषता है सुनियोजित व सुनिश्चित व्यवस्था। कार्यों में अनावश्यक व अवांछित विलम्बन हो एतदर्थ आपने समस्त प्रणाली को ऑनलाईन कर

दिया। स्वच्छता और पारदर्शिता आपके प्रशासन की गुणवत्ता के प्रमुख आधार हैं, जिससे समस्त कर्मचारी समान रूप से यथायोग्य लाभान्वित होते हैं। प्रशासनिक सुचारू संचालन के लिए यह आदर्श स्थिति आपमें समग्रता से परिलक्षित होती है। आपके इन्हीं उदात्त प्रशासनिक गुणों के कारण ही डी.ए.वी. संस्थाएं सतत प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं।

**अभिप्रेरक वक्ता:-** आप अपने पूज्य दादाजी महात्मा आनन्द स्वामी जी की तरह ही अत्यन्त प्रखर वक्ता हैं। आपकी वक्तृत्व शैली इतनी हृदयग्रही व तार्किक होती है कि श्रोता भाव विभोर हो एकटक सुनते रहते हैं। आपके जीवन-प्रबन्धन आधारित प्रेरक व उत्साहवर्धक वक्तव्य बेजोड़ है आपके वक्तव्य से विदित होता है कि आप हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं पर अधिकार रखते हैं। उद्धरणों का सटीक प्रयोग आपकी भाषण शैली के सुन्दर आभूषण हैं। दैनन्दिन जीवन व्यवहार परक उपदेश आपके गहन स्वाध्याय की विमल अभिव्यक्ति है। आपकी इसी अभिप्रेरणा से आर्य जगत् व डी. ए.वी. परिवार में नवीन प्राणों का संचार हो रहा है।

**समाजसेवी:-** आर्य समाज के छोटे नियम में लिखा है कि “संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।” इस नियम को आत्मसात् करते हुए माननीय डॉ. पूनम सूरी जी समाज सेवा के सभी आयामों में निष्ठापूर्वक, सम्पूर्ण संवेदना के साथ सतत प्रयत्नशील हैं। डॉ. पूनम सूरी जी ने राष्ट्रभूत महायज्ञ के लिए अनेकविध योजनाएं संचालित की हैं। महात्मा हंसराज जन्मोत्सव के अवसर पर आर्य युवा समाज के तत्त्वावधान में आपके प्रेरणाप्रदनेतृत्व में रक्तदान-महादान के राष्ट्र व्यापी कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग 25 हजार यूनिट रक्त एकत्रित कर न जाने कितने जीवनों की रक्षा की है। बाढ़ व भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित जनों के पुनर्वास हेतु अनेक बार वस्त्र व भोजन-सामग्री के साथ ही प्रधानमन्त्री राहत कोष में करोड़ों की राशि प्रदान कर राष्ट्र-यज्ञ में अपनी पुनीत आहुति डाली। जीवन के लिए जल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में जल ही जीवन है। अतः आपने इस महत्वपूर्ण जीवन-द्रव्य के संरक्षण के लिए शिक्षण संस्थाओं व आर्य समाजों के माध्यम से “प्रोजेक्ट बूंद” अभियान चलाकर जल संरक्षण के प्रति चेतना जगित की।

**आर्यजुष्ट:** आर्यत्व आपकी पीढ़ियों में सम्प्रविष्ट तथा आत्मा में अनुप्रविष्ट है। आप सतत भद्रता की ओर अग्रसर रहते हैं। अतः ऋषि दयानन्द का सर्वाधिक प्रिय मन्त्र “विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव” आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप अन्धविश्वास व रूढ़िवादिता के प्रबल प्रभञ्जक हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान के रूप में आप ने अपनी संस्थाओं से बाहर निकलकर लोगों के बीच व सार्वजनिक स्थानों पर भजन संध्या के रूप में वैदिक धर्म के विज्ञान-सम्मत स्वणिम सिद्धान्तों का प्रचार करना सुनिश्चित कराया है। आपका स्पष्ट अभिमत है कि हमारी शिक्षण संस्थाएं ज्ञान के पुनीत संस्थान हैं न कि विद्या-विक्रय केन्द्र। आपके नेतृत्व में आर्य युवा समाज न केवल अस्तित्व में आया अपितु उसने दहेज-प्रथा, बाल-अपराध, यौन-शोषण, जाति-प्रथा जैसे सामाजिक दोषों के सफल संघर्ष किया है। (शेष पृष्ठ 22 पर)

## ( पृष्ठ 1 का शेष )

मूल और जड़ों से जुड़ा हुआ हो। हमारी संस्था का श्री पूनम जी के माध्यम से मूल से जुड़ना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह बात स्वाभाविक सी ही होती है कि मुखिया के अपने व्यक्तित्व का समूची संस्था पर सार्थक एवं प्रबल तथा साकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वही आज डी.ए.वी. में भी देखने को मिल रहा है और मैं डी.ए.वी. के समारोहों में अपने वक्तव्य में यह बात बार-बार बल देकर कहता आया हूँ कि हमारी यह वैदिक परम्पराएं तथा इनका अधिक से अधिक कार्यान्वयन ही हमारी वास्तविक उन्नति का आधार है।

आदरणीय श्री पूनम जी का व्यक्तित्व अपने आप में एक आकर्षक व्यक्तित्व है। बहुत सहजता से अपनी बात मनवाने की कला भी इनके पास है। इसी कारण इन्होंने आर्यसमाज की दो धाराओं को भी बहुत सीमा तक एक-दूसरे के बहुत करीब लाने का कार्य किया है जिसका उल्लेख दिल्ली के महासम्मेलन में स्वयं माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी जी ने भी किया था। क्योंकि ये स्वयं सिद्धान्तिष्ठ व्यक्ति हैं इसलिए इनकी हार्दिक इच्छा रहती है कि उन वैदिक मानवमूल्यों के संस्कार हमारे छात्रों में भी जाएं। इसके लिए डीएवी के प्रत्येक शिक्षण-संस्थान में समय-समय पर 'वैदिक चेतना शिविरों' तथा 'चरित्र निर्माण शिविरों' का आयोजन किया जाता है। जिस प्रकार किसी टीम को विजय प्राप्त करने के लिए प्रत्येक खिलाड़ी को अपना शतप्रतिशत सहयोग देने की आवश्यकता होती है वैसे ही संस्थान के कार्य भी इसी भावना से किए जाने अपेक्षित होते हैं मगर यह भी उतना ही सत्य है कि एक योग्य कैप्टन ही अपनी टीम में इस प्रकार का जोश भरने में अपनी प्रमुख भूमिका निभाता है। माननीय पूनम जी के नेतृत्व में पूरे संस्थान में एक नया जोश तथा निष्ठा और समर्पण की भावना दृष्टिगत होती है। आदरणीय श्री पूनम सूरी जी को जब से हमारे संस्थान का नेतृत्व मिला है, तभी से इनके मस्तिष्क में अपनी सैद्धान्ति विरासत को परवान चढ़ाने के लिए नई-नई योजनाएं आती रहती हैं। इसी दिशा में इन्होंने दिल्ली के समिति कार्यालय के प्रांगण में एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण कराया है। इतना ही नहीं बल्कि हमारे प्रत्येक स्कूल, कॉलेज या अन्य संस्थानों में भी भव्य यज्ञशालाएं निर्मित की गई हैं। इनकी इस

भावना का आदर करते हुए हमारे संस्थानों में प्राथमिकता के आधार पर यज्ञशालाएं बन रही हैं। हमने स्वयं जाकर देखा है। इनके नेतृत्व में आर्य युवा समाज ने भी गति पकड़ी है तथा उसके अन्तर्गत भी अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं। स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, नशामुक्ति आदि के लिए भी अनेक स्थानों पर कार्य किया जाता है।

यदि हम आयोजित किए जाने वाले समारोहों की बात करें तो यूपी तो वर्ष भर में बड़े स्तर पर भी बहुत से कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं मगर जहां तक मुझे स्मरण है इनके आने के बाद स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा आनन्दस्वामी जैसी विभूतियों के समारोह भी बहुत ही भव्य स्तर पर मनाए जाते हैं। आर्यसमाज का एक स्वर्णिम नियम यह है कि 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है', इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सामाजिक एवं राष्ट्रीय आपदाओं के अवसर पर डीएवी द्वारा आर्थिक सहयोग एवं सेवा आदि का सहयोग दिया जाता है। इसी कड़ी में 'आओ संसार को सुखी बनाएँ' इस स्लोगन के अन्तर्गत प्रान्तीय स्तर पर विभिन्न प्रान्तों में सम्मेलन कराए जाने का एक नवीन कार्य आरंभ किया गया है तथा मुम्बई में गत दिनों भव्य आयोजन किया गया। इन सम्मेलनों में केवल डीएवी के लोग ही भाग नहीं लेते हैं बल्कि समस्त आर्यजनों को सादर आमन्त्रित किया जाता है, तथा जनसाधारण के साथ-साथ गण्य-मान्य लोग भी आकर डीएवी और आर्यसमाज की पावन वैदिक-विचारधारा से परिचित होते हैं। प्रत्येक वर्ष डीएवी स्थापना दिवस प्रेरणा दिवस के रूप में भव्यता के साथ मनाया जाता है। त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी का जन्मदिवस 'समर्पण पर्व' के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर अति भव्यता के साथ आयोजित किया जाता है। एक नई तथा प्रशंसनीय परम्परा यह चलाई गई है कि इस पर्व पर किन्हीं दो राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त महानुभावों, आर्यजगत् की उन विभूतियों को जिन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना जीवन लगा रखा है तथा विशेष उपलब्धि प्राप्त डीएवी के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों आदि को सादर सम्मानित वा पुरस्कृत किया जाता है। नए ईरादों से ये समस्त दिशाएं बदली हैं, सुरभित हुआ गुलशन हवाएँ बदली हैं।

**पगडिण्डियाँ वही हैं, रास्ते भी वही मगर,  
पूनम की चान्दनी में फिज़ाएँ बदली हैं॥**

—महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर-175018, हि.प्र.

## ( पृष्ठ 21 का शेष )

**सहृदयता:-** आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्ता समिति नई दिल्ली के प्रधान मान्यवर डॉ. पूनम सूरी जी यद्यपि अनुचित के प्रति पूर्ण असहिष्णु है पुनरपि सभी जन उन्हें आशुतोष के रूप में जानते हैं जिनका हृदय घृतवत् किंचित ऊष्मा से पिघलने वाला व किंचित शीतलता से जमने वाला है। यदि आपको यह अनुभव हो जाए कि किसी के साथ अन्याय हो रहा है तो आपकी सहृदयता व संवेदनशीलता सद्यः सक्रिय हो जाती है और उसे चुनौती के रूप में स्वीकार कर पीड़ित को सम्बल प्रदान करते हैं।

**पर्यावरण-संरक्षण:-** वेद के आदेश को शिरोधार्य करने वाले पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी जुलाई माह को पर्यावरण मास घोषित कर सभी शिक्षण संस्थाओं व आर्य समाजों को नानाविध वृक्षों के आरोपण का उत्तरदायित्व सौंप रखा है। जिसका अनुपालन पूर्ण निष्ठा से प्रतिवर्ष किया जाता है।

**यज्ञप्रेमी:-** पूज्य प्रधान जी के मन में यज्ञ के प्रति अगाध आस्था है। आपकी उपस्थिति में सम्पन्न होने वाले समस्त कार्यक्रम यज्ञ से ही

प्रारम्भ होते हैं। इस तरह पर्यावरण संरक्षण का सम्पूर्ण चक्र यज्ञ की परिधि में चलता है अतः माननीय प्रधान जी का यज्ञ पर्यावरण संरक्षण का आधार है। डी.ए.वी. प्रबन्धन संगठन का सुदीर्घ इतिहास निश्चित यशस्वी है किन्तु डी.ए.वी. मुख्यालय में यज्ञशाला का निर्माण एवं मासिक, अन्तराल में सभी कर्मियों, अधिकारियों की उपस्थिति में यज्ञ का सम्पादन आपके ही परम पुरुषार्थ की परिणति है। यह आपकी यज्ञ-प्रियता को ही परिलक्षित करता है।

आपके इन्हीं दिव्य कर्म श्रृंखला के सुफल में ही जहाँ आपको आर्यश्रेष्ठ, युवा हृदय सम्राट के साथ ही द्वारा डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि से सुभूषित किया है वहीं भारत गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने पदमश्री के प्रतिष्ठित गौरवान्वित किया है। गण हैं अनन्त, शब्द-ज्ञान मेरा अत्यल्प है। पदचिन्हों पर चलूँ यही मेरा निज संकल्प है॥

अन्त में अनन्त से मेरी यही सविनय प्रार्थना है कि आपको उत्तम स्वास्थ्य, चिरायु, सत्व-समृद्धि प्रदान करे। जिससे आप अधिकाधिक समाज व राष्ट्र की सेवा चिरकाल तक करते रहे।

— प्राचार्य डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर







**कदर** करनी है तो जीते जी करो।  
अर्थी उठाते वक्त तो  
नफरत करने वाले भी रो पड़ते हैं।

**टंकारा समाचार**

**अगस्त 2018**

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-08-2018

R.N.I. No 68339/98

प्रकाशन तिथि: 23.07.2018

**मसालों की शुद्धता और गुणवत्ता के पारखी  
83 वर्षों का तजुर्बा रखते हैं महाशय जी**



**मसाले**

सेहत के रखवाले  
असली मसाले सच-सच



ESTD. 1919

**महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड**

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

E - mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

